वर्ष-15, अंक-01 वि.सं. 2075, युगाब्द 5120 मार्च 2019 मूल्य : 20.00
सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/- आजीवन : रु. 2000/- वार्षिक : रु. 200/-

मासिक पत्रिका

सेवा संवाद

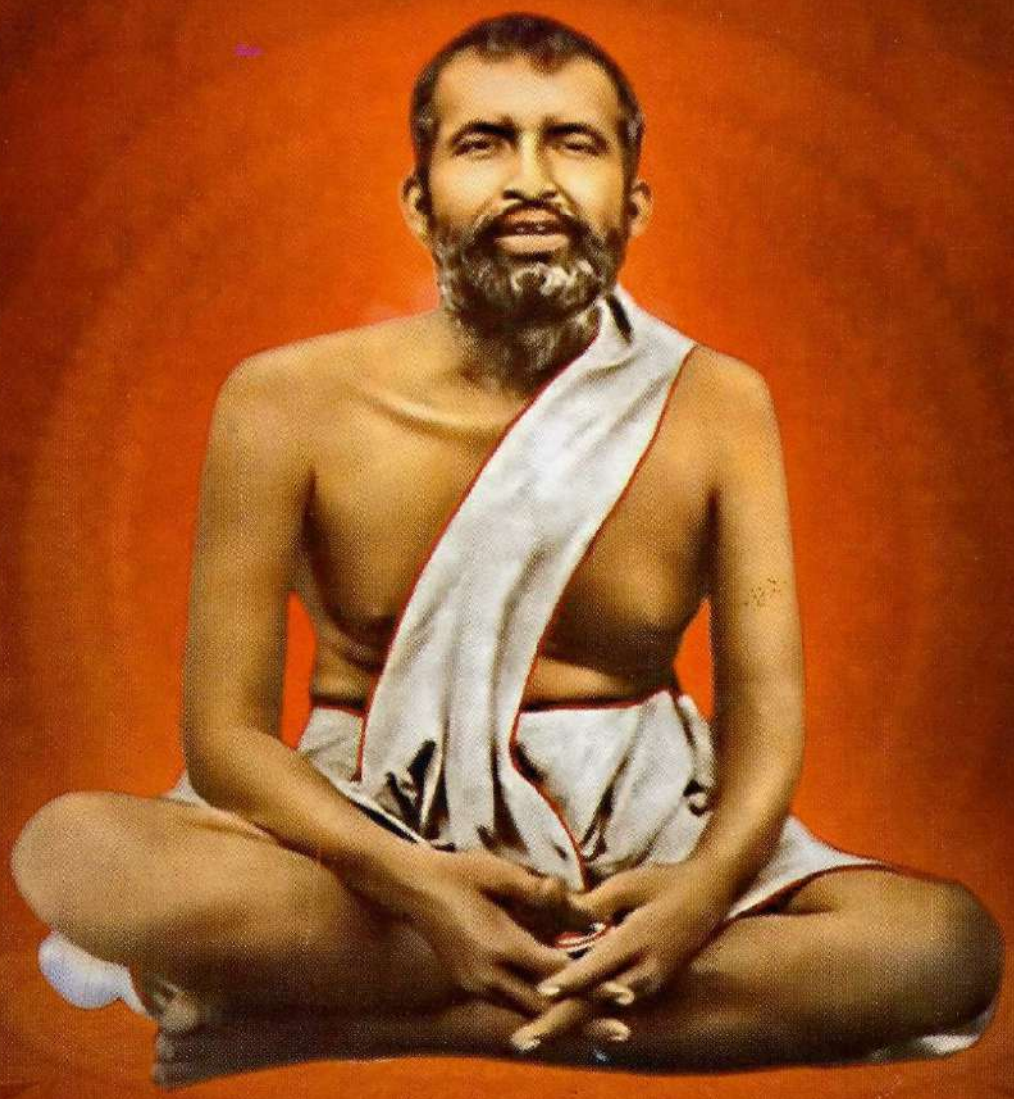

जिसने तप कर ज्ञान योग से,
मानव का कल्याण किया।
आओ हम उनका ध्यान धरें,
नमन और अनुशरण करें।।

- शिव.

www.rkmpune

अन्त्योदय प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा केन्द्र, प्रयागराज

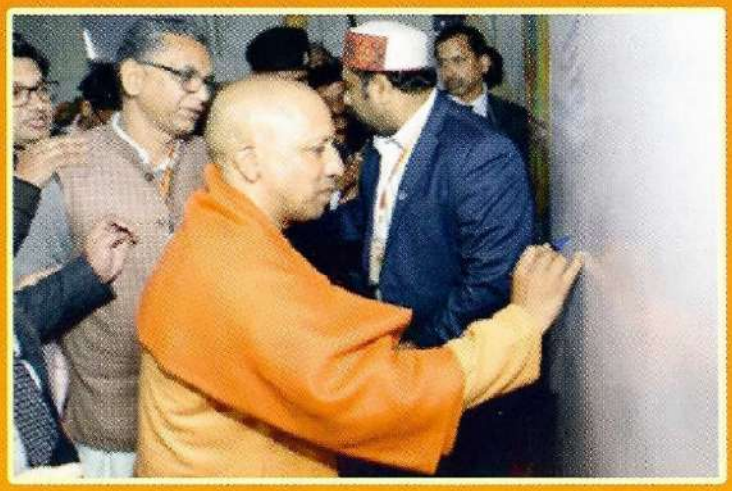

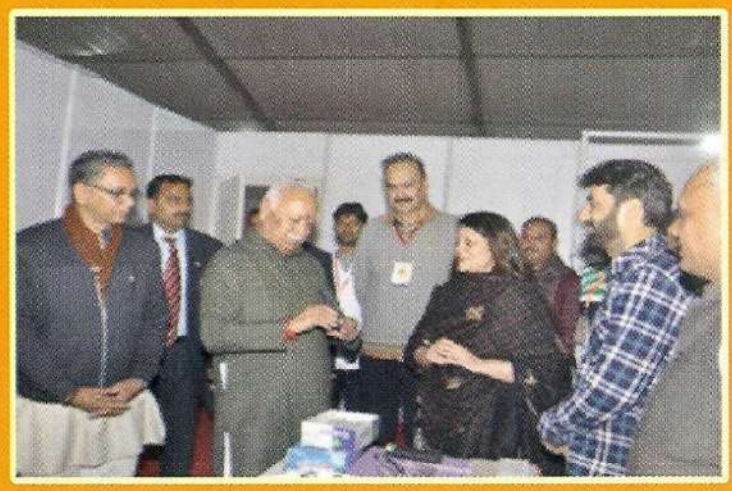

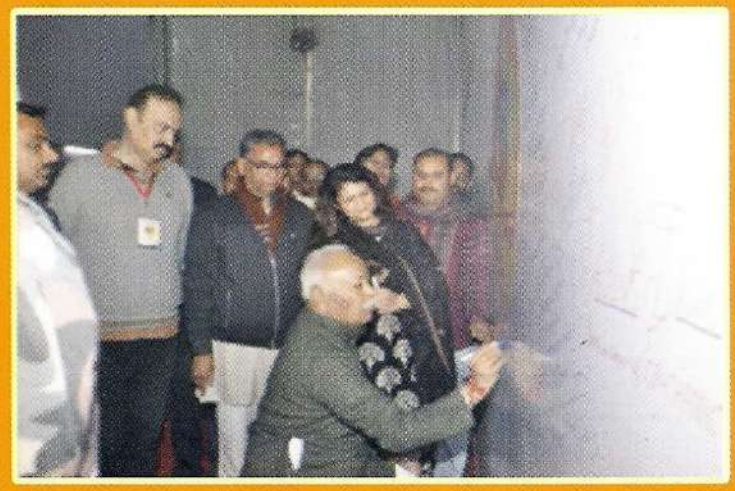

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र

सेवा संवाद

वर्ष-15, अंक-01 | वि.सं. 2075, युगाब्द 5120 | मार्च 2019 | मूल्य : 20.00

सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/- आजीवन : रु. 2000/- वार्षिक : रु. 200/-

मार्गदर्शक

डॉ0 अवधेश प्रसाद सिंह
अध्यक्ष

डॉ0 देवेन्द्र प्रताप सिंह
सचिव

राहुल सिंह
सहसचिव

ब्रह्मदेव शर्मा
संस्थापक न्यासी

सम्पादक
डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी
मो. 09451176775

सह सम्पादक
राजेश
मो. 09793120738

प्रबन्धक
विजय अग्रवाल
मो. 9415020996

मुद्रक एवं प्रकाशक
जितेन्द्र कुमार अग्रवाल
मो. 9415003111

कार्यालय : भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निरालानगर, लखनऊ (उ.प्र.) 226020
दूरभाष : 0522-4001837, 2789406
Email : sewasamwad@gmail.com

आलोक : *प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं।*
प्रकाशक एवं सम्पादक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सहयोग राशि नकद अथवा चेक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'सेवा संवाद (भाऊराव देवरस सेवा न्यास)' के पक्ष में जो लखनऊ में देय हो, भेजने की कृपा करें अथवा हमारे बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ (IFSC : BKID0006806) के खाता संख्या 680610110000102 में जमा/अन्तरित करा कर कार्यालय पते पर सूचित करने की कृपा करें।

इस अंक में

1.	अपनी बात	डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी	5
2.	विश्व जल संरक्षण दिवस	राजेश	6
3.	स्वामी रामकृष्ण परमहंस	अनन्त भूषण	7
4.	महाशिवरात्रि व्रत	संकलन	9
5.	दान से धन एवं मन की शुद्धि	श्री रामचन्द्र केशव डोंगरे	10
6.	"जल में कुम्भ"	हिन्दुस्तान टीम	11
7.	जल संरक्षण	पर्यावरण	12
8.	जल संरक्षण एक अनिवार्य आवश्यकता	श्याम नारायण मिश्र	14
9.	त्याग का अर्थ	संकलन	16
10.	गुणकारी औषधि : अलसी	अचलचंद जैन	17
11.	कला के साथ नारी का सम्मान	समाचार	19
12.	प्रयाग–कुम्भ में महिलाओं का सम्मान	समाचार	20
13.	शिक्षा के माध्यम से भारत को खड़ा करना होगा	डॉ. कृष्ण गोपाल	22
14.	देवपुत्र गौरव सम्मान समारोह सम्पन्न	समाचार	25
15.	आनंद का त्यौहार होली	संकलन	26
16.	अभूतपूर्व है प्रयागराज का कुम्भ	भूमिका राय	28
17.	पं. दीन दयाल उपाध्याय की जीवन गाथा	समाचार	33
18.	पर्यावरण संरक्षण	रश्मि अग्रवाल	34
19.	सक्षम–माधव नेत्र पेढ़ी एक प्रकल्प	संस्था परिचय	35
20.	घर से करें सेवा की शुरुआत	संकलन	37

अपनी बात

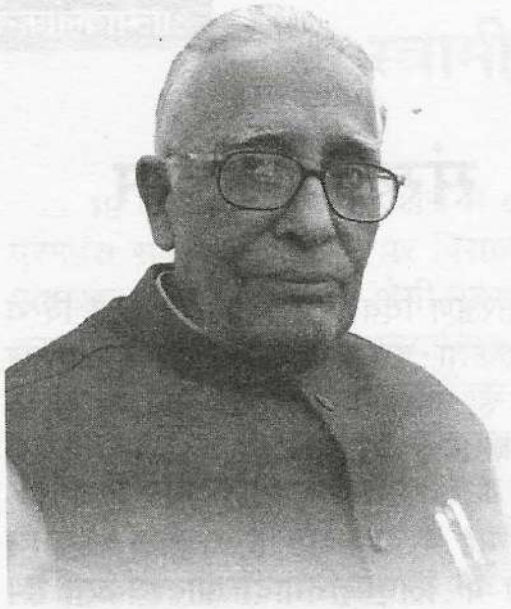

मनुष्य परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट कृति है। तभी तो मनुष्य को परमात्मा ने पाँच–ज्ञानेन्द्रियों और पाँच कर्मेन्द्रियों के साथ सर्वांग पूर्ण और सुन्दर बनाया है। उसमें यह क्षमता प्रदान की है वह चाहे तो मनुष्य से देवत्व प्राप्त करके जीते जी अपने को मानव से महामानव बना ले अथवा ज्ञान और कर्मेन्द्रियों के दुरुपयोग से अपनी दुर्गति कर ले, अधम से अधम गति को प्राप्त कर ले। यह सब कुछ मानव के प्रयास–प्रयत्न सदिच्छा और संकल्प शक्ति पर निर्भर करना है। सुर, नर, मुनि, सिद्ध, योगी पुरुष, महात्मा सन्त इसके प्रमाण हैं। ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ ऊपर बढ़ने, विकास के पथ पर प्रयास करने अथवा नीचे उतरने, अधोगति को प्राप्त करने के लिए एक सीढ़ी के रूप में सहयोग करती हैं। जहाँ जिसने ज्ञान और कर्म का समन्वय जितनी मात्रा में किया है वहाँ वह उतनी ही मात्रा में ऊपर की ओर बढ़ा है, वही अपने और समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो सका है।

जिह्वा एक ज्ञानेन्द्रिय है, यह मुख में दाँतों के बीच रहती है, मर्यादा का पालन करते हुए सीमा में रहती है। इसके बारे में यह उक्ति प्रसिद्ध है कि–**जिह्वा में अमृत बसे जो कोई जाने बोल। विष बासुकि उतरै सभी जिह्वा के इक बोल।।** यह बात स्वतः स्पष्ट है। हमारे जीवन में अनुभव आते रहते होंगे तथापि एक प्रत्यक्षदर्शी घटना का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा। एक सज्जन अपनी सज्जनता के लिए प्रसिद्ध थे, क्रोध नहीं करते थे। एक बार उनके एक मित्र ने किसी कार्य के निमित्त विलम्ब से आता हुआ इन्हें देखकर उल्टा–सीधा कहना प्रारम्भ किया, आरोप लगाया कि उच्चाधिकारियों से तुम्हारी शिकायत के कारण मेरे साथ बहुत बुरा हुआ। अपने मित्र से झूठे आरोपों को सुनकर उनसे नहीं रहा गया और वे क्रोध में आकर दो चार थप्पड़ अपने मित्र को जड़ बैठे और तब उनके मित्र ने शान्त स्वर में हाथ जोड़कर कहा मैं तो आप पर झूठा आरोप लगाकर आपके सहनशीलता की परीक्षा ले रहा था। दोनों शान्त हुए एक–दूसरे से गले मिले। आज बड़े से बड़े उच्च पदस्थ लोगों में भी इन्द्रियों का संयम, धैर्य और विवेक खोता हुआ दृष्टिगोचर हो रहा है प्रायः जन सामान्य की कान से सुनी हुई बातों पर वे भरोसा करने लग जाते हैं आंख से देखने का प्रयास नहीं करते, जिससे कुछ अनुचित कर बैठते हैं। **'दुर्जन संवाद श्रृखंला आर्य परिवाद बध्नाति हि'** अर्थात् दुर्जनों की बातचीत की कड़ी सज्जनों को निन्दा में, बुराइयों में लपेट लेती है। अस्तु आवश्यक है कि हम अपने इन्द्रियों को प्रयास पूर्वक सही मार्ग पर लगाने, धैर्य संयम और विवेक के साथ आगे बढ़ें, स्वयं प्रगति करें और दूसरों को आगे बढ़ाने में सहायक बने। यही भले लोगों का काम हैं।

प्रयाग में कुम्भ–मेले के माध्यम से स्वच्छता, उदारता, सहनशीलता, विशालता, पवित्रता, अपार जन समूह के दर्शन का लाभ, संतों–महात्माओं के दर्शन, उनका ज्ञान, विविधता में एकता का भाव का दर्शन, मनोरम सुन्दर वातावरण का दर्शन लाभ कर जीवन को धन्य बनाने, करने की प्रेरणा से निरन्तर सद्मार्ग पर आगे बढ़ने के शुभ संकल्प को हम सुदृढ़ करें। होली के पर्व को आनन्द से मनायें। प्रेम के रंग में सबको सराबोर करने की दिशा में निरन्तर बढ़ते चलें। स्वामी रामकृष्ण परमहंस के आध्यात्मिक मार्ग दर्शन जीनव के हर क्षेत्र में हमारे लिए सहायक सिद्ध होंगे, इस विश्वास के साथ, 'जो पाया सो बांटना इस भावभूमि में यह अंक आपको सादर समर्पित है।

❐ शिव

विश्व जल संरक्षण दिवस

22 मार्च यानि विश्व जल संरक्षण दिवस। प्रत्येक वर्ष, पूरा विश्व और जल संरक्षण के प्रति जागरुकता...इन तीन आधारभूत बिंदुओं पर जल संरक्षण की दिवस की नींव है, लेकिन शायद यह नींव उतनी भी मजबूत नहीं है। पानी का व्यर्थ बहाव इस बात की ओर इशारा करता है।

पूरा विश्व जल संरक्षण के मुद्दे पर एकजुट है, क्योंकि जल ही जीवन है और यह जीवन जीने के लिए बुनियादी आवश्यकता है। लेकिन इसके बावजूद पानी का व्यर्थ बहाव, इस ओर इशारा करता है कि हम अब भी उसके असली महत्व को समझ नहीं पाए हैं।

मानव अपने स्वास्थ्य, सुविधा, दिखावा व विलासिता को दिखाने के लिये अमूल्य जल की बर्बादी करने से नहीं चूकता है। पानी का इस्तेमाल करते हुए हम पानी की बचत के बारे में जरा भी नहीं सोचते हैं। परिणामस्वरूप अधिकांश जगहों पर जल संकट की स्थिति पैदा हो चुकी है। यदि हम अपनी आदतों में थोड़ा–सा भी बदलाव कर लें तो पानी की बर्बादी को रोका जा सकता है। बस आवश्यकता है दृढ़संकल्प करने की तथा उस पर गंभीरता से अमल करने की, क्योंकि जल है तो हमारा भविष्य है। इसलिए यदि हम पानी की बचत करते हैं तो यह भी जल संग्रह का ही एक रूप है। एक अध्ययन से पता चला है कि मानव यदि अपनी आदतों को बदल लें तो 80 प्रतिशत से भी अधिक पानी की बचत हो सकती है। यदि मानव तमाम नहीं कुछ ही आदत बदल लें तो भी 15 प्रतिशत जल की बचत संभव है। बूँद–बूँद की बचत से एक बड़ी बचत हो सकती है। इस प्रकार पानी की बचत ही जल संरक्षण है।

राष्ट्रीय विकास में जल की महत्ता को देखते हुए अब हमें जल संरक्षण को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकताओं में रखकर पूरे देश में कारगर जन–जागरण अभियान चलाने की आवश्यकता है। जल संरक्षण के कुछ परंपरागत उपाय तो बेहद सरल और कारगर रहे हैं। जिन्हें हम, जाने क्यों, विकास और फैशन की अंधी दौड़ में भूल बैठे हैं।

पानी का दुरूपयोग हर स्तर पर कानून के द्वारा, प्रचार माध्यमों से कारगर प्रचार करके और विद्यालयों में पर्यावरण की ही तरह जल संरक्षण विषय को अनिवार्य रूप से पढ़ा कर रोका जाना बेहद जरूरी है। अब समय आ गया है कि केन्द्रीय और राज्यों की सरकारें जल संरक्षण को अनिवार्य विषय बना कर प्राथमिक से लेकर उच्च स्तर तक नई पीढ़ी को पढ़वाने का कानून बनाएँ।

निश्चय ही जल संरक्षण आज के विश्व–समाज की सर्वोपरि चिन्ता होनी चाहिए, चूंकि उदार प्रकृति हमें निरन्तर वायु, जल, प्रकाश आदि का उपहार देकर उपकृत करती रही है, लेकिन स्वार्थी आदमी सब कुछ भूल कर प्रकृति के नैसर्गिक सन्तुलन को ही बिगाड़ने पर तुला हुआ है।

मेरा तो आज विश्व–समाज को यहीं सन्देश है

जल संरक्षण कीजिए, जल जीवन का सार!
जल न रहे यदि जगत में, जीवन है बेकार!!

❐ राजेश

स्वामी रामकृष्ण परमहंस

❑ अनन्त भूषण

19 शताब्दी में धार्मिक क्षेत्र में श्री रामकृष्ण परमहंस सबसे ऊँचे स्थान पर विराजमान थे वह एक रहस्यमयी और महान योगी पुरुष थे जिन्होंने काफी सरल शब्दों में आध्यात्मिक बातों को सामान्य लोगों के सामने रखा। जिस समय हिन्दू धर्म बड़े संकट में फंस गया था उस समय श्री रामकृष्ण परमहंस ने हिन्दू धर्म में एक नयी उम्मीद जगाई। श्रीरामकृष्ण परमहंस के पास में अद्भुत शक्तियाँ थीं। ऐसा कहा जाता है कि श्री रामकृष्ण परमहंस भगवान विष्णु के अवतार थे।

श्री रामकृष्ण परमहंस का जन्म सन 1836 में बंगाल के एक गाँव में हुआ था। उनके घर में पाँच बच्चे थे जिनमें श्री रामकृष्ण परमहंस चौथे नंबर पर थे। उनके माता–पिता बहुत ही सरल स्वभाव के थे मगर ब्राह्मण होने की वजह से वह काफी धार्मिक थे।

जब एक बार श्री रामकृष्ण परमहंस के पिताजी खुदीराम गया के लिए तीर्थयात्रा पर जा रहे थे तो उन्हें भगवान विष्णु का दिव्याभास हुआ और उसमें भगवान विष्णु ने कहा की उनका जो अगला लड़का होगा उसके रूप में खुद भगवान विष्णु अवतार लेने वाले हैं।

ठीक उसी तरह ही रामकृष्ण की माँ चन्द्र देवी को भी भगवान विष्णु ने सपने में आकर कहा की उनका जो अगला बच्चा होगा वह दैवीय गुणों से संपूर्ण होगा और वह भगवान के समान ही होगा। उसके कुछ ही समय बाद चन्द्र देवी ने रामकृष्ण परमहंस को जन्म दिया।

एक आम बच्चे की तरह ही रामकृष्ण परमहंस को स्कूल में जाना, पढ़ना, लिखना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। बचपन से ही उन्हें अध्यात्म में अधिक रुचि थी। कम उम्र से ही वह लम्बे समय तक विचार करते थे। बचपन से ही उन्हें भारतीय अध्यात्म से जुड़े नाट्य में अधिक रुचि थी।

जब बंगाल में सब तरफ़ लोग ब्राह्मण और इसाई धर्म की ओर बहुत ज्यादा आकर्षित हो रहे थे और हिन्दू धर्म पूरी तरह से खतरे में था उस समय श्री रामकृष्ण परमहंस ने हिन्दू धर्म को ख़तम होने से बचाया ही नहीं बल्कि हिन्दू धर्म को इतना

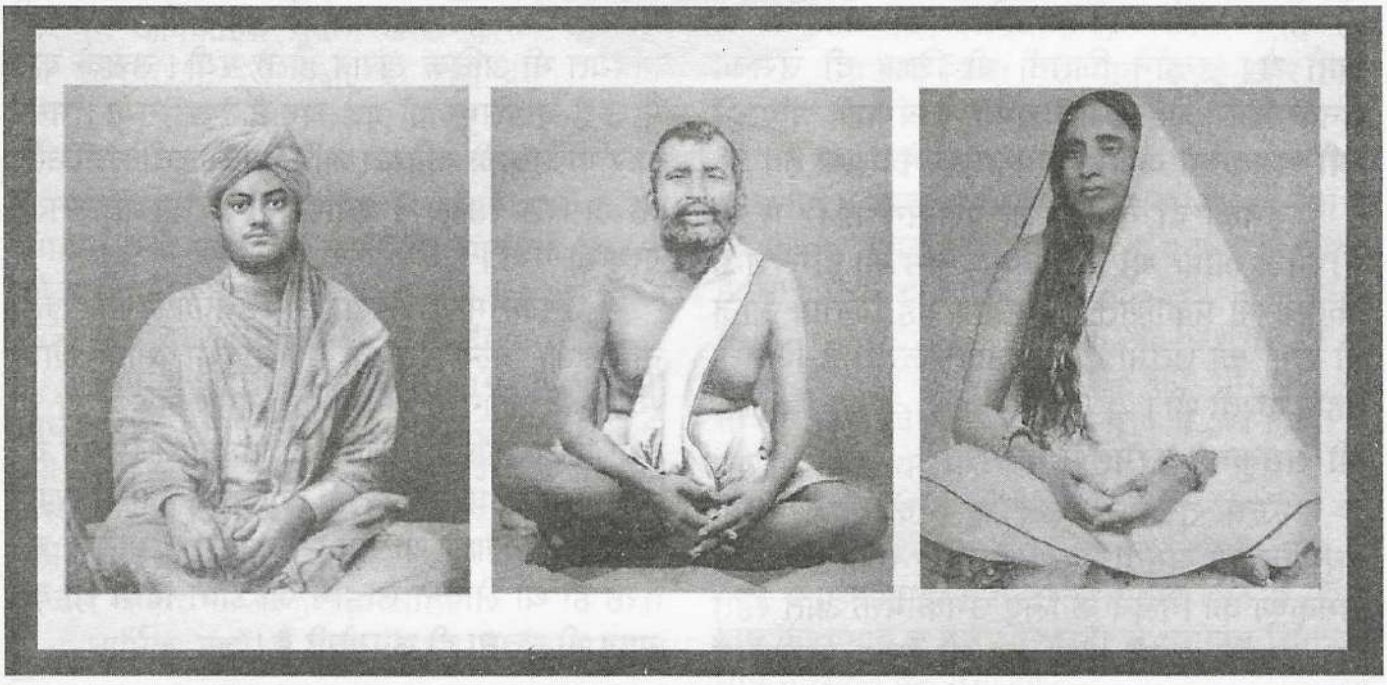

शक्तिशाली बनाया कि लोगो को फिर से एक बार हिन्दू धर्म अपनी ओर आकर्षित करने लगा था।

जब श्री रामकृष्ण परमहंस 16 साल के थे तो उनके भाई रामकुमार अपने काम में हाथ बँटाने के लिए उन्हें कोलकाता ले आए थे। सन 1855 में राणी रासमणि ने दक्षिणेश्वर में देवी काली का मंदिर बनवाया था और उस मंदिर में रामकुमार एक मुख्य पुजारी थे। जब उनकी मृत्यु हो गयी तो श्री रामकृष्ण परमहंस को उस मंदिर का पुजारी बना दिया गया।

श्री रामकृष्ण पूरी तरह से काली के ध्यान में लीन हो जाते थे और बहुत घंटो तक देवी का ही ध्यान करते थे, इस दौरान वह एक पुजारी की जो जिम्मेदारियाँ होती थी उसे भी भूल जाते थे। धीरे–धीरे श्री रामकृष्ण परमहंस देवी काली के ध्यान में इतने व्यस्त रहते थे की उन्हें देवी के चारो तरफ़ भव्य आभा दिखने लगी थी।

श्री रामकृष्ण परमहंस द्वारा दी गयी शिक्षा

श्री रामकृष्ण परमहंस ने अपने पूरे जीवन में एक भी किताब नहीं लिखी और ना ही कभी कोई प्रवचन दिया। वह प्रकृति और रोज के जिंदगी के उदाहरण लेकर बहुत ही सरल भाषा में लोगों को समझाते थे। परमहंस जब भी कुछ सीख देते थे तो लोग अपने आप उनकी तरफ़ आकर्षित हो जाते थे। उन्होंने जितनी भी शिक्षा दी उसको उनके शिष्य महेन्द्रनाथ गुप्ता ने बंगाली भाषा में **'श्री रामकृष्ण कथामृत'** किताब में लिखा है।

उनकी दी गयी शिक्षा पर सन 1942 में **'द गोस्पेल ऑफ़ श्री रामकृष्ण'** नाम की इंग्लिश में किताब भी प्रकाशित की गयी। यह किताब आज भी सभी को उतनी ही आकर्षित करती है जितनी पहले करती थी।

श्री रामकृष्ण परमहंस के भक्त

जिस तरह से एक फूल के चारों तरफ़ मधुमक्खियाँ घूमती रहती हैं ठीक उसी तरह श्री रामकृष्ण को मिलने के लिए उनके भक्त आते रहते थे। उन्होंने अपने भक्तों को दो मुख्य हिस्सों में विभाजित किया था। उनके कुछ भक्त गृहस्थी सँभालने वाले थे। उन्हें वह सिखाते थे की परिवार की जिम्मेदारी सँभालने के साथ–साथ किस तरह से भगवान की अनुभूति की जा सकती है।

उनका भक्तों का दूसरा अहम वर्ग था। वह मध्यम वर्ग के युवा का था। उन्हें वह भिक्षुक बनाने की पूरी शिक्षा देते थे और उनके माध्यम से अपना सन्देश समाज के हर कोने में पहुँचाना चाहते थे। उन भिक्षुकों में सबसे पहले शिष्यों में नरेन्द्रनाथ का नाम आता है जिन्हें आज सभी स्वामी विवेकानन्द नाम से जानते है।

स्वामी विवेकानन्द ने ही वेदांत का सन्देश पूरी दुनिया में पहुंचाया। उन्होंने ही एक बार फिर से हिन्दू धर्म की जागृति की, भारत के सभी लोगो को फिर से नींद से जगाने का काम किया। उन्होंने ही रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी और अपने गुरु का कार्य जारी रखने का कार्य किया था।

श्री रामकृष्ण परमहंस की मृत्यु

सन 1885 में श्री रामकृष्ण परमहंस को गले का कैंसर हुआ था। कोलकाता में अच्छे डॉक्टर से उपचार कराने के लिए उनके भक्त श्यामपुकुर के घर में रखा गया था। लेकिन जैसे जैसे समय गुजरता जा रहा था उसके साथ–साथ उनकी तबियत भी अधिक ख़राब होती गयी। उसके बाद में उन्हें कोसिपुर के बड़े घर में रखा गया। मगर फिर भी उनकी तबियत अधिक बिगड़ती गयी और 16 अगस्त 1886 में कोसिपुर के घर में उनकी मृत्यु हो गयी।

उनकी मृत्यु के बाद भी उनका प्रभाव ख़त्म नहीं हुआ, बल्की उनके जो सबसे प्रभावी शिष्य स्वामी विवेकानन्द थे उन्होंने अपने गुरु द्वारा दी गयी शिक्षा और तत्वज्ञान को रामकृष्ण मिशन की सहायता से प्रसार करने का कार्य जारी रखा। उनकी जो शिक्षा थी वह पुराने ऋषि–मुनियों की तरह ही थी लेकिन उन्होंने जो ज्ञान दिया था वह आज भी उतना ही उपयोगी है। ❐

महाशिवरात्रि व्रत

'महाशिवरात्रि' हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध त्यौहार है। यह त्यौहार हिन्दू कैलेण्डर के अनुसार **फाल्गुन माह के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को मनाया जाता है।**

कुछ विद्वानों का मत है कि महाशिवरात्रि के दिन शिवजी और माता पार्वती विवाह–सूत्र में बंधे थे जबकि अन्य कुछ विद्वान् ऐसा मानते हैं कि इस दिन शिवजी ने 'कालकूट' विष का पान किया था जो सागरमंथन के समय अमृत से पहले समुद्र से निकला था।

इस दिन शिव पार्वती विवाह का उत्सव मनाया जाता है और जगह–जगह शिव पार्वती विवाह की झाँकी भी निकाली जाती है और लोग इस दिन सुबह–सुबह नदियों में स्नान करके पूरे दिन उपवास और व्रत रखते है। **भगवान् शिव के मंदिरों में शिवलिंग के ऊपर दूध, जल, घी, शहद, शक्कर और बेलपत्र चढ़ाये जाते है।** पूरा भारत इस दिन शिवमय हो जाता है मंदिरों में हर हर महादेव के नारे और घंटो की गूंज दूर दूर तक सुनाई देता है पूरा वातावरण भक्तिमय हो जाता है। इस दिन हर भारतीय अविवाहित युवती अच्छे वर की कामना से पूरी श्रद्धा के साथ व्रत रखती है। विवाहित महिलाएं अपने पति और परिवार की सुख समृद्धि की कामना करती है।

महाशिवरात्रि के दिन भक्तगण व्रत रहकर भगवान शिव का ध्यान करते हैं। शाम को शिवजी की बारात निकाली जाती है एवं सभी भक्तगण हर्ष व उल्लास के साथ प्रेम भाव से जयकारा करते हैं।

महाशिवरात्रि को रात्रि जागरण का भी विधान है। लोग शिवमंदिरों में अथवा घरों में पूरी–पूरी रात जागकर भगवान शिव की आराधना करते हैं। कई लोग इस दिन शरीर और मन को पवित्र करने के लिए उपवास रखते हैं। कुछ लोग निर्जल रहकर भी उपवास करते हैं।

धार्मिक ग्रंथों में ऐसा विधान है कि भगवान शिव की पूजा करने से सारे सांसारिक मनोरथ पूरे हो जाते हैं। नीति–नियम से न हो सके तो साधारण तरीके से पूजा करने पर या सिर्फ उन्हें स्मरण कर लेने पर भी भगवान शिव प्रसन्न हो जाते हैं।

बेल का एक पेड़ था और उस पेड़ के नीचे भगवान शिव का शिवलिंग था जो पत्तियों से ढ़क गया था। चित्रभानु नाम का व्यक्ति जब पेड़ पर बैठा था तो उसके हाथ से कुछ जल नीचे शिवलिंग पर भी गिरा और फिर जानवरों के इंतजार में वह कई बेलपत्रों को तोड़कर नीचे फेंकता जो की शिवलिंग पर जाकर गिरता। इस प्रकार जाने अनजाने में चित्रभानु से भगवान शिव का पूजा हो गयी जिसके कारण चित्रभानु का हृदय परिवर्तन हो गया था इस प्रकार कोई भी जानवर वहा आता तो दयावश चित्रभानु उन्हें छोड़ देता यह और प्रक्रिया पूरी रात चलती रही और सभी आये जानवरों को उनके प्राण लेने की अपेक्षा उनके जीवन दान दे दिया इस प्रकार जब पूरी रात बीत गई तो भगवान शिव चित्रभानु के इस हृदय परिवर्तन से बहुत ही खुश हुए और फिर भगवान शिव तुरंत प्रकट होकर चित्रभानु को दर्शन दिए और कैसे चित्रभानु ने भगवान शिव को प्रसन्न किया पूरी बात बताई और फिर चित्रभानु को हमेशा दयालु बने रहने का वरदान दिया इस प्रकार यदि कोई भी भगवान शिव के प्रभाव में आता है वह चाहे कितना क्रूर ही क्यों न हो उसका हृदय परिवर्तन होकर दयालु हो जाता है।और ऐसी भी मान्यता है की इसी दिन समुद्र मंथन में हलाहल विष निकला था जिससे विष के प्रभाव से सम्पूर्ण जगत में त्राहि–त्राहि मच गयी थी तो फिर इस विष को भगवान शिव ने अपने कंठ में धारण किया था जिसके कारण भगवान शिव का कंठ नीला पड़ गया। भगवान शिव के ऊपर विष का प्रभाव कम करने के लिए इस दिन विशेष रूप से जल चढ़ाया जाता है जिससे भगवान शिव के ऊपर विष का प्रभाव न पड़े और तभी से भगवान शिव का नाम नीलकंठ पड़ गया था। ❐

दान से धन एवं मन की शुद्धि

❑ श्री रामचन्द्र केशव डोंगरे

कलियुग में दान प्रधान है। श्रुति में निर्देश है कि जो सिर्फ अपने लिए पका कर खाता है, वह अन्न नहीं खाता, पाप पका कर खाता है–

केवलाघो भवति केवलादी।

कलियुग में धर्म केवल एक पैर अर्थात दान के ऊपर टिका हुआ है। ईमानदारी, परिश्रम तथा धर्मानुसार अर्जित धन–सम्पत्ति का दान ही पुण्य दायक होता है। उनका सत्कर्मों के लिए उपयोग तो किया जा सकता है परन्तु सांसारिक सुख – सुविधाओं के लिए – व्यक्तिगत लाभ के लिए उनका उपभोग नहीं किया जाना चाहिए।

अर्थ अमृत है, पर असावधानी से वह जहर भी बन जाता है। **जो नीति से आये और जिसका उपयोग रीति से हो, वह अर्थ अमृत है, पर अनीति से अर्जित धन जहर बन जाता है।**

यदि धर्म की मर्यादा न रहे तो धन अनर्थ करता है। धन साधन है, धर्म साध्य है।

धन कमाना कठिन नहीं है, उसका धर्म–कार्यों–सेवा, सहायता, दान आदि में सदुपयोग करना कठिन है। धन का धार्मिक कर्तव्यों दान, सेवा, गौ सेवा, जैसे सत्कर्मों में सदुपयोग हो तो वह सुख देता है और विलासिता आदि दुष्कर्मों में उपभोग करने पर तरह–तरह के दुःख देता है।

ज्ञान दान श्रेष्ठ दान है। अन्न दान और वस्त्र दान से कुछ समय के लिए शांति प्राप्त होती है, किन्तु ज्ञान दान अर्थात जहाँ अध्यात्म ज्ञान का दान होता है वहाँ सारे तीर्थ आ जाते हैं।

दान देने का अधिकार गृहस्थ को दिया गया है। दान में विवेक रखो। इतना दान दो कि गृहस्थ की आवश्यकता की पूर्ति में बाधा न पड़े।

दान से धन को शुद्धि, स्नान से तन की शुद्धि तथा ध्यान से मन की शुद्धि होती है।

जिसका धन शुद्ध नहीं, उसका दान तथा उसकी सहायता स्वीकार नहीं करनी चाहिए।

यदि सत्कर्मों में, धर्म में सम्पत्ति का सदुपयोग करोगे तो लक्ष्मी माता तुम्हें नारायण की गोद में बिठायेंगी।

धन का दान करते रहने से धन के प्रति ममता कम होती है तथा तन से सेवा करने से देहाभिमान में कमी आती है।

दान देते समय जब तुम लेने वाले को परमात्मा का रूप समझकर दान दो तभी दान सफल–सार्थक होगा।

आंगन में आये याचक को यदि कुछ नहीं मिलता है तो वह घर का पुण्य ले जाता है।

याचक मांगने नहीं आता, वह तो हम को ज्ञान देने आता है कि पूर्व जन्म में मैंने किसी को कुछ दिया नहीं, इसलिए मैं भिखारी हुआ हूँ। यदि आप भी किसी को कुछ न देंगे तो अगले जन्म में मेरे जैसे याचक बनेंगे।

❑

"जल में कुम्भ"

❑ हिन्दुस्तान टीम

तरंगों में प्रवहमानता रहती है तरंग कभी स्थिर नहीं रहती है और इसलिए वस्तु का एक रूप भी कभी स्थिर नहीं रहता है, क्योंकि वस्तु तरंगों का ही एक समुच्चय है। मनुष्य की वस्तुविशेष के आकार के प्रति जो आसक्ति है, वह अनुचित है। क्योंकि, वस्तु स्थिर नहीं है। तरंगे आती हैं और चली जाती हैं। किन्तु जिनमें ये तरंगे प्रवाहित होती रही हैं, वे सत्य हैं– जैसे जल तो सत्य है, किन्तु तरंगें आती हैं, जाती है। तो रस–समुद्र ही परमपुरुष है। रस–समुन्द्र में तरंगें आज है–कल नहीं भी रह सकती है। मगर इन तरंगों को हम अस्वीकार नहीं कर सकते हैं, क्योंकि ये तरंगें हैं हमारे परमपुरुष की। सब कुछ एक–दूसरे से सम्बन्धित हैं। इसलिए किसी को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। दुनिया के हर पहलू में साधक सूक्ष्म विचार करेंगे और याद रखेंगे कि यह जो पहलू है, वही है तरंग–रस की मूल वस्तु। जो मनुष्य इन तरंगों को अस्वीकार करते हैं, उनका अस्तिव भी विपर्यस्त हो जाता है। क्योंकि इनका भौतिक अस्तित्व भी है, इनकी मानसिक संरचना भी है। केवल आध्यात्मिक अस्तित्व ही नहीं, भौतिक, मानसिक दोनों ही उन्हीं तरंगों के ही विशेष रूप हैं। हां, इनका जो आध्यात्मिक अस्तित्व है, वह है एक जल के समान, और भौतिक मानसिक अस्तित्व है तरंगों के समान। यह जो वैयष्टिक जल है अर्थात जीवात्मा, उस रस–समुद्र में एक प्राणी है जैसे एक छोटा सा घड़ा है और उसमें भी वही पानी है। बाहर वाला पानी और भीतर वाला पानी दोनों ही अध्यात्म रस हैं–दोनों ही एक चीज है। और, यह जो घड़ा है वह क्या है? वह है भौतिक और मानसिक आधार। साधना क्या है? भीतर वाला जल और बाहर वाले जल को एक बनाने की चेष्टा। भीतर वाला जल और बाहर वाला जल जब एक बन जाएगा, तब घड़ा नहीं रहेगा। इसी स्थिति को **'जल में कुम्भ है, कुम्भ में जल है, बाहर–भीतर पानी कहा गया है।** ❑

कुंभ 2019 "अपना पूर्वोत्तर" कार्यक्रम का शुभारंभ

प्रयागराज कुंभ मेले में संस्कार भारती द्वारा आयोजित **"अपना पूर्वोत्तर" कार्यक्रम का शुभारंभ** 17 जनवरी को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के **सरकार्यवाह सुरेश भैयाजी जोशी** ने किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में विख्यात लोकगायिका पदमश्री मालिनी अवस्थी एवं संस्थापक संस्कार भारती पद्मश्री विभूषित बाबा योगेंद्र जी उपस्थित रहे। कार्यक्रम मुख्य रूप से पूर्वोत्तर राज्यों की सांझा संस्कृति पर आधारित है। कार्यक्रम में पूर्वोत्तर के सातों राज्यों– असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, त्रिपुरा, मेघालय, मिजोरम एवं मणिपुर से आए लगभग 400 कलाकार अपने कार्यक्रमों की प्रस्तुति देंगे, अपनी कला, संस्कृति, लोकगीत एवं लोक संस्कृति को प्रस्तुत करेंगे।

उल्लिखित कार्यक्रमों का आयोजन प्रयागराज कुंभ के सेक्टर–7 के संस्कार भारती "अपना पूर्वोत्तर" के शिविर में आयोजित होगा। इन कलाकारों द्वारा कुंभ परिसर के विभिन शिविरों में भी प्रस्तुति दी जाएगी। यह कार्यक्रम एक माह तक भिन्न–भिन्न कलाकारों एवं टोलियों द्वारा अनवरत चलते रहेंगे। कार्यक्रम शुभारंभ के दौरान संस्कार भारती के अखिल भारतीय महामंत्री अमीरचंद, संस्कार भारती के उपाध्यक्ष बांकेलाल, उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग के चेयरमैन ईश्वर शरण विश्वकर्मा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर गिरीश चन्द्र त्रिपाठी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र प्रचारक अनिल जी प्रांत संघचालक विश्वनाथ निगम जी और प्रांत प्रचारक रमेश जी उपस्थित रहे। ❑

जल संरक्षण

वर्षों से बढती जनसंख्या, औद्योगिकीकरण में वृद्धि तथा कृषि में विस्तार होने से जल की मांग बढती जा रही है। अतएव जल संरक्षण आज की आवश्यकता बन गई है । **वर्षा जल संचयन मूल्यतः भवनों की छतों पर इकट्ठा करके भूमि में संरक्षण करके आगे काम में लेने की प्रक्रिया है।** इसके लिए यह अत्यावश्यक है कि भू–जल की गिरावट तथा भू–जल स्तर में सुधार किया जाए तथा समुद्र के जल का अंतर्गमन अर्थात समुद्री जल को भूमि की तरफ आने से रोका जाए और वर्षा मौसम के दौरान सतही जल का अपवाह तथा शहरी अपशिष्ट जल का संरक्षण किया जाए।

जल का संरक्षण

जल संरक्षण के लिए हम क्या कर सकते है ?

1. यह जांच करें कि आपके घर में पानी का रिसाव न हो ।
2. आपको जितनी आवश्यकता हो उतने ही जल का उपयोग करें ।
3. पानी के नलों को इस्तेमाल करने के बाद बंद रखें ।
4. मंजन करते समय नल को बंद रखें तथा आवश्यकता होने पर ही खोलें ।
5. नहाने के लिए अधिक जल को व्यर्थ न करें ।
6. ऐसी वाशिंग मशीन का इस्तेमाल करें जिससे अधिक जल की खपत न हो ।
7. खाद्य सामग्री तथा कपड़ों को धोते समय नलो का खुला न छोड़े ।
8. जल को कदापि नाली में न बहाएं बल्कि इसे अन्य उपयोगों जैसे –पौधों अथवा बगीचे को सींचने अथवा सफाई इत्यादि में लाए ।
9. सब्जियों तथा फलों को धोने में उपयोग किए गए जल को फूलों तथा सजावटी पौधों के गमलों को सींचने में किया जा सकता है ।
10. पानी की बोतल में अंततः बचे हुए जल को फेंके नही अपितु इसका पौधों को सींचने में उपयोग करें।
11. पानी के हौज को खुला न छोड़ें ।
12. तालाबों, नदियों अथवा समुद्र में कूड़ा न फेंके ।

किसानों द्वारा

कृषि प्रथा जैसे ऑफ सीजन जुताई (पहले मानसून की बारिश के पूर्व) मिट्टी की नमी का संरक्षण। यदि भूमि 30 सेमी की गहराई तक जोता जाता है 90 सेमी की गहराई तक नमी हासिल की जा सकती है। अन्य प्रथायें जैसे बीजों की जल्दी बुवाई, उर्वरकों का कम उपयोग, खर पतवार–निकाई, कीट और रोग नियंत्रण और समय पर कटाई मिट्टी में सीमित नमी की बावजूद उपज में वृद्धि करता है।

मिट्टी में जैविक अवशेषों को मिलाने से मिट्टी की नमी का संरक्षण होगा।

पहाड़ी ढलानों की खेती पानी की बहाव को रोकता है।

छः प्रतिशत तक ढालू भूमि पर जहाँ भूमि की जल–शोषण क्षमता अधिक हो तथा 600 मिमी प्रतिवर्ष से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में समोच्च–बन्ध बनाकर खेती की जानी चाहिए ताकि एक समान ढाल की लम्बाई कम की जा सके तथा दो बन्धों के बीच की भूमि पर खेती की जा सके। इस प्रकार भूमि एवं नमी संरक्षण साथ–साथ हो जाते हैं।

600 मिमी0/वर्ष से अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में बन्धों को लम्बाई के अनुरूप थोड़ा ढालू बनाया जाता है ताकि अतिरिक्त अपवाह सुरक्षित रूप से बाहर निकाला जा सके।

कंटूर जुताई और घास और पेड़ों का रोपण पानी के बहाव लो रोकता है और नमी बनाए रखने के लिए मिट्टी की क्षमता में वृद्धि करता है ।

हरी खाद (मिट्टी में ताजी हरी पत्तियों का समावेश) और फसल रोटेशन (मिट्टी और जलवायु आधारित विभिन्न फसलों की खेती जैसे फलियां के बाद अनाज लगाना) मिट्टी की नमी को संरक्षित करता है।

बाजरा, दाल, मूंगफली, आदि जैसे निकट दूरी फसलों के लिए फव्वारा सिंचाई के उपयोग से सतह के पानी का 30 से 40% तक संरक्षण होता है ।

ड्रिप सिंचाई सब्जियों, कपास, गन्ना जैसे निकट दूरी पंक्ति फसलों के लिए सबसे उपयुक्त है। इस प्रणाली की दक्षता 25 से 30% के आसपास मिट्टी की नमी के संरक्षण करने में है। ड्रिप सिंचाई का सबसे सस्ता और आसान बनाने के लिए एक मिट्टी के बर्तन में एक से तीन छेद करके इसे पौधे के बगल में मिट्टी में आंशिक रूप से दबा देना है। घड़े में भरी पानी धीरे–धीरे मिट्टी की नमी लगातार सुनिश्चित करता है और पौधे को पानी की निरंतर आपूर्ति हो जाती है।

वर्षा जल संचयन और छोटे तालाबों में भंडारण गर्मियों के दौरान पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करता है। ❐

दुनिया का करीब 70% हिस्सा पानी से ढका है लेकिन कुल पानी का बस 2.5% ही पीने योग्य है.

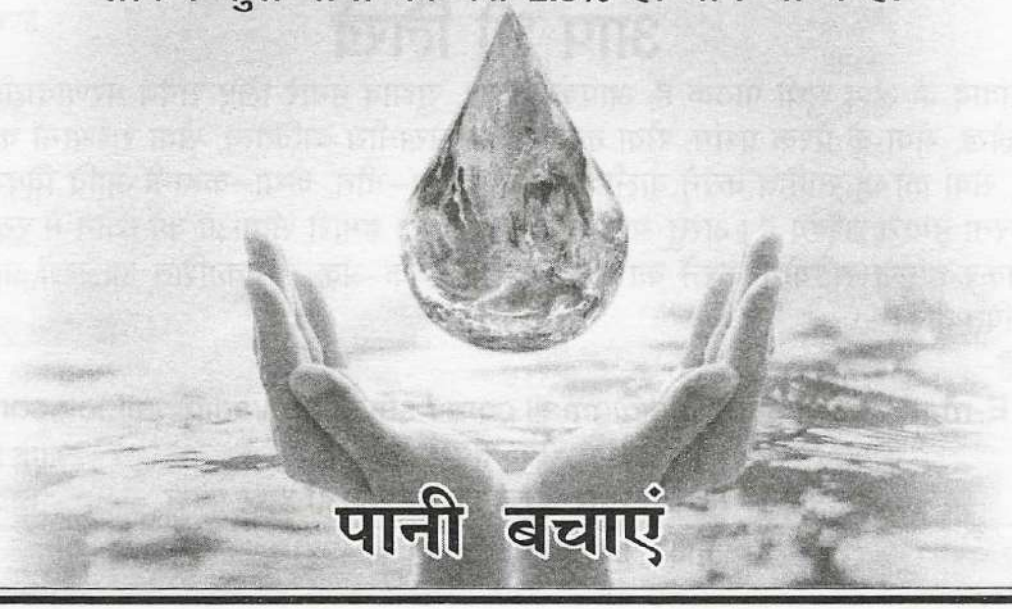

जल संरक्षण एक अनिवार्य आवश्यकता

❑ श्याम नारायण मिश्र

संसार के प्रत्येक प्राणी का जीवन आधार जल ही है। शायद ही ऐसा कोई प्राणी हो जिसे जल की आवश्यकता न हो। जल हमें समुद्र,नदियों, तालाबों, झीलों, वर्षा एवं भूजल के माध्यम से प्राप्त होता है। गर्म हवाओं के चलने से समुद्र, नदियों, झीलों, तालाबों का जल वाष्पित होकर ठंडे स्थानों की ओर चलता है जहाँ पर न्यून तापमान के कारण संघनित होकर वर्षा के रूप में पृथ्वी पर गिरता है। जबकि पहाड़ों पर और भी कम तापमान होने के कारण जल बर्फ के रूप में जम जाता है जोकि गर्मी के दिनों में पिघलकर नदियों में चला जाता है।

मानव अपने स्वास्थ्य, सुविधा, दिखावा व विलासिता को दिखाने के लिये अमूल्य जल की बर्बादी करने से नहीं चूकता है। पानी का इस्तेमाल करते हुए हम पानी की बचत के बारे में जरा भी नहीं सोचते हैं। परिणामस्वरूप अधिकांश जगहों पर जल संकट की स्थिति पैदा हो चुकी है। यदि हम अपनी आदतों में थोड़ा–सा भी बदलाव कर लें तो पानी की बर्बादी को रोका जा सकता है। बस आवश्यकता है दृढ़संकल्प करने की तथा उस पर गंभीरता से अमल करने की, क्योंकि जल है तो हमारा भविष्य है। इसलिए यदि हम पानी की बचत करते हैं तो यह भी जल संग्रह का ही एक रूप है। एक अध्ययन से पता चला है कि मानव यदि अपनी आदतों को बदल लें तो 80 प्रतिशत से भी अधिक पानी की बचत हो सकती है। यदि मानव तमाम नहीं कुछ ही आदत बदल लें तो भी 15 प्रतिशत जल की बचत संभव है। बूँद–बूँद की बचत से एक बड़ी बचत हो सकती है। इस प्रकार **पानी की बचत ही जल संरक्षण है।**

❑

आप भी लिखें

सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख, सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा सस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं, काव्य–गीत, कथा–कहानी आदि विषयों पर सामग्री प्रकाशित करना हमारा उद्देश्य हैं। अस्तु आप से प्रार्थना है कि हमारी सीमाओं को ध्यान में रखते हुए अपना आलेख भेजकर हमारा सहयोग करने का कष्ट करें। प्रत्येक अंक में प्रकाशित आलेखों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित करें।

हमारा पता है–

E-mail : sewasamwad@gmail.com / sevasamvad@outlook.com

सेवा संवाद

सी-91 निराला नगर, लखनऊ - 226020 उत्तर प्रदेश

मो0 : 9450020514, 9454049918

भाऊराव देवरस सेवा न्यास स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प

(अ) सुदूर ग्रामीण अंचल एवं शहरी क्षेत्र की 6 सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य केन्द्रों का संचालन

1 अप्रैल 2018 से 31 जनवरी 2019 तक लाभान्वित रोगी विवरण

क्र.	सेवा केन्द्र	दिवस	माह दिसम्बर 2018 तक लाभान्वित रोगी	माह जनवरी 2019 में लाभान्वित रोगी	कुल
1.	वेदान्त आश्रम, पपनामऊ	सोमवार	918	114	1032
2.	सेवा समर्पण संस्थान बिन्दौवा	मंगलवार	2510	228	2738
3.	अम्बेदकरनगर	बुधवार	587	93	680
4.	51 शक्तिपीठ (बीकेटी)	गुरुवार	574	42	616
5.	अर्जुनपुर (बीकेटी)	शुक्रवार	43	00	43
6.	माधव सेवा आश्रम	शनिवार	253	28	281
	कुल लाभान्वित रोगी		**4885**	**505**	**5390**

(ब) माधवराव देवड़े स्मृति रुग्ण सेवा केन्द्र, सी-91, निरालानगर, लखनऊ

1.	एलोपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	7426	783	8209
2.	होम्योपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	4993	418	5411
	कुल लाभान्वित रोगी संख्या		**12419**	**1201**	**13620**

(स) रुग्ण सेवा केन्द्र, माधव सेवा आश्रम, लखनऊ

1.	होम्योपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	2480	252	**2732**
1 अप्रैल 2018 से 31 जनवरी 2019 तक			**कुल लाभान्वित रोगी सं.**		**21742**

माधव सेवा आश्रम रायबरेली रोड, लखनऊ में प्रान्तशः ठहरने वाले लाभान्वित बन्धुओं की संख्या

क्र.	सेवा केन्द्र	माह दिसम्बर 2018 तक	माह जनवरी 2019 में	कुल
1.	उत्तर प्रदेश	50197	6203	56400
2.	उत्तराखण्ड	141	34	175
3.	बिहार	34818	3666	38484
4.	झारखण्ड	5198	485	5683
5.	उड़ीसा	423	54	477
6.	मध्य प्रदेश	2630	367	2997
7.	छत्तीसगढ़	571	47	618
8.	राजस्थान/गुजरात	62	19	81
9.	महाराष्ट्र	536	00	536
10.	नेपाल	917	49	966
11.	दिल्ली/पंजाब/हरियाणा	412	110	522
12.	पश्चिम बंगाल	836	45	881
13.	अन्य प्रान्त	735	45	780
	योग	**97476**	**11124**	**108600**

त्याग का अर्थ

संसार में रहने वाला मनुष्य अपना घरबार चलाता है, कामकाज करता है। कोई व्यापार करता है तो कोई अन्य काम करता है। हमारी परंपरा में हर एक प्रकार के त्याग की बात कही जाती है, परंतु त्याग का अर्थ कर्म का त्याग कभी नहीं हो सकता है। कर्म का त्याग कोई नहीं कर सकता हैं हमारे यहां दो प्रकार के त्याग की बात कही गई है।

प्रथम है, 'मैं' का त्याग और दूसरा है, मुझे इस कार्य में से कोई लाभ होना चाहिए, संपत्ति, कीर्ति, सुख आदि मिलने चाहिए, अन्यों के मुख से अपनी वाह–वाह होनी चाहिए ऐसी वृत्ति का त्याग। 'मैं' की भावना का अर्थ है अहंकार और 'कुछ मेरा है' ऐसा मानना इसका अर्थ है ममता की भावना। अहंकार और ममता परस्पर जुड़े हुए हैं इसीलिए उसे हम एक शब्द 'अहंकार' से समझें। इस स्थिति में दो बातों के त्याग का अर्थ होता है अहंकार और कर्म के फल की आशा का त्याग। इन दोनों बातों को छोड़ना हमारे यहां कहा गया है।

अहंकार नष्ट हो जाने के पश्चात मनुष्य ने ईश्वर के हाथ में रहे उपकरण के नाते कार्य करना चाहिए। कर्मफल की जरा भी इच्छा नहीं करनी चाहिए। कर्म को ही ईश्वर की पूजा मानकर अपने चारों ओर ईश्वर में प्रवेश करने की क्षमता मनुष्य को प्राप्त करनी चाहिए।

(श्री गुरुजी दृष्टि एवम् दर्शन)

❐

रोटी-कपड़ा फाउंडेशन की अध्यक्षा का सम्मान

लखनऊ : समाज के निर्बल, असहाय, कमजोर और वंचित लोगों के उत्थान के लिए उत्कृष्ट कार्य करने हेतु अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद द्वारा यह सम्मान **रोटी कपड़ा फाउंडेशन की अध्यक्षा शोभा ठाकुर को सम्मानित किया गया।** एमिटी विश्वविद्यालय लखनऊ परिसर में आयोजित अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद के तीन दिवसीय अधिवेशन के समापन सत्र में लोकसभा अध्यक्षा सुमित्रा महाजन ने शोभा ठाकुर को पुष्पगुच्छ और स्मृति चिन्ह देकर किया। शोभा ठाकुर, कपड़ा फाउंडेशन के जरिए रोजाना 250 से अधिक गरीब लोगों को एक समय का भोजन उपलब्ध करा रहीं हैं। इसके अलावा गरीब बच्चों के लिए निःशुल्क स्कूल और स्वास्थ्य परीक्षण शिविरों का आयोजन भी करतीं हैं। इस अवसर पर रोटी कपड़ा फाउंडेशन के संस्थापक आशुतोश चौबे भी उपस्थित रहे। ❐

स्वास्थ्य

गुणकारी औषधि : अलसी

❑ अचलचंद जैन

शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए योग, व्यायाम और ऐसे आहार की जरूरत होती है, जिसमें भरपूर प्रोटीन, विटामिन एवं मिनरल हों अलसी भी एक ऐसा ही आहार है, जिसमें प्रोटीन, फाइबर, ओमेगा–3, फेटी एसिड, विटामिन बी एवं सी, जिंक, कैल्शियम, आयरन, कॉपर आदि तत्व होते हैं। अलसी का सेवन हर उम्र में लाभदायकहै। अलसी शरीर की रक्षा प्रणाली को सुदृढ़ कर, शरीर को बाह्य संक्रमण से बचाती है। सुपर सीड्स के नाम से मशहूर, अलसी को हम किसी भी रूप में खाने में शामिल कर सकते हैं।

आजकल भागदौड़ की जिदंगी में हम जंकफूड और फास्ट फूड खाते हैं इतना ही नहीं, हम व्यायाम एवं योग को भूलकर इतने आलसी बन गये हैं कि दरवाजा बंद करने, गाड़ी चलाने, टी.वी. का चैनल बदलने आदि कार्यो के लिए भी हम रिमोट का उपयोग करने लगे हैं। यदि हमें इधर–उधर जाना हो, तो हम पैदल चलकर नहीं जाते अपितु दुपहिया अथवा चार पहिया वाहन का उपयोग करते हैं। यही कारण है कि हमारी युवा पीढ़ी ब्लडप्रेशर हार्ट अटैक, डिप्रेशन जैसी बीमारियों की चपेट में आ रही है। शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए योग, व्यायाम और ऐसे आहार की जरूरत होती है जिसमें भरपूर प्रोटीन, विटामिन एवं मिनरल हों।

अलसी एक ऐसा आहार है, जिसमें प्रोटीन फाइबर ओमेगा–3, फैटी एसिड, विटामिन बी एवं सी, जिंक, कैल्शियम, आयरन कॉपर आदि तत्व होते हैं। अलसी का सेवन हर उम्र में लाभदायक है। अलसी शरीर की रक्षा प्रणाली को सुदृढ़ कर, शरीर को वाह्य संक्रमण से बचाती है। सुपर सीडस के नाम से मशहूर, अलसी को हम किसी भी रूप में खाने में शामिल कर सकते हैं। इसका बाहरी छिलका सख्त होने के कारण इसे पीसकर खाने से जल्दी और ज्यादा लाभ मिलता है। प्रतिदिन हमें 25–30 ग्राम अलसी का सेवन करना चाहिए। इसको मिक्सी में सूखी पीसकर, आटे में मिलाकर रोटी, पराठे आदि बनाकर खाना चाहिए। इसका पाउडर सब्जी, दही, दाल, सलाद आदि में मिलाकर खाना भी लाभदायक रहता है।

अलसी निम्न रोगों के निवारण में अचूक दवा है–

यह कैंसर, ब्लडप्रेशर एवं मधुमेह से बचाती है तथा मोटापे को कम करती है कब्ज को खत्म करती है, रक्त को पतला बनाती है। एवं रक्त नलियों की सफाई करती हैं। ये कोलेस्ट्राल, ब्लडप्रेशर एवं हृदय को सही रखती है। इस तरह अलसी हार्ट अटैक के कारणों पर रोक लगाती है। त्वचा, केश और नखूनों को सुदृढ़ बनाती है। मुँहासे, एग्जिमा, दाद, खाज–खुजली, डैन्ड्रफ, बाल झड़ना आदि अलसी के उपयोग से ठीक होते हैं। इसके बीजों को ठन्डे जल के साथ पीसकर, लेप करने से सिरदर्द, सूजन, घाव आदि में लाभ मिलता हैं इसके तेल में सौंठ का चूर्ण मिलाकर मालिश करने से कमर दर्द में राहत मिलती है इसका तेल आँखों के लिए हितकारी है इसके तेल का उपयोग चित्रकारी एवं वार्निश बनाने में भी होता है। इसके ताजे हरे पत्ते की सब्जी बनाकर खाने से श्वास, कफ तथा वातग्रस्त रोगी को लाभ होता है।

अलसी भी एक ऐसा ही आहार है, जो शुद्ध, सात्विक, निरापद और ओमेगा–3 का खजाना है यह हमारे शरीर को ऊर्जा देती है एवं थकावट को दूर करती है तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है इतना ही नहीं, अलसी का सेवन हमें कई रोगों से बचाता भी है। रोगग्रस्त होने पर अलसी का सेवन, रोगों के निवारण में सहायक होता हैं। इस तरह अलसी एक गुणकारी एवं रोगनाशक औषधि है।

–गाँधी मुहत्तों का बास
सायला, जिला : जालोर (राज.)
फोन नं. 02977–272079

❑

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सी–91, निराला नगर, लखनऊ – 226020 (उ.प्र.)

फोन–फैक्स : 0522-4001837, 2789406, E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in

सहकार निवेदन

पिछले 24 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुयी है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्य प्रभावित न हो अतः आयस्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित **कार्पस फण्ड** से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी पूरी नहीं होती। अतएव लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं–

1. **सचल चिकित्सा सेवा के लिए**– रु. 11,000/- की मासिक धनराशि का सहयोग करके, एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. **नेत्र चिकित्सा शिविर के लिए**– रु. 2000/- की धनराशि का सहयोग करके एक **मोतियाबिन्द पीड़ित** नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर नेत्र ज्योति प्रदान करना।
3. **विकलांग सहायता शिविर के लिए**– रु. 1,000/- से 6,000/- तक की राशि दे करके, एक विकलांग बन्धु की सहायता में उनके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, वैशाखी, ट्राईसाइकिल, ह्वील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. **कार्पस फण्ड (स्थायी निधि) के लिए**– रु. 10,000/- से अधिक की धनराशि का अर्पण करके, न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. **छात्रवृत्ति के लिए**– प्राथमिक रु. 3000/-, माध्यमिक रु. 5000/-, हाईस्कूल रु. 7000/-, इंटरमीडिएट रु. 8000/-, आईटीआई/डिप्लोमा रु. 10,000/-, स्नातक रु. 10000/-, परास्नातक रु. 12000/-, प्रतियोगी परीक्षाएँ रु. 15000/-, इंजीनियरिंग रु. 18000/- मेडिकल के छात्रों को रु. 20000/- की वार्षिक छात्रवृत्ति का सहयोग करके न्यास के माध्यम से पूर्वांचल और वनवासी क्षेत्र के बालकों के लिए वार्षिक छात्रवृत्ति भिजवाना।
6. **सेवा चेतना अर्द्धवार्षिक पत्रिका के लिए**– रु. 1,200/- की आजीवन सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. **सेवा संवाद मासिक के लिए**– रु. 2,000/- की आजीवन एवं रु. 5,000/- की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना।
8. **माधव सेवा आश्रम के लिए**– रु. 5,00,000/- का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5)(vi) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। अप्रवासी भारतीय भी दान दे सकते हैं। कृपया अपनी दानराशि चेक व ड्राफ्ट **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** के पक्ष में जो **लखनऊ** में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेज सकते हैं।

समाज सेवा-कार्यों हेतु आपसे अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें। दान की राशि आप सीधे हमारे खाते में भी जमा कर सूचित कर सकते हैं।

बैंक ऑफ इण्डिया, निरालानगर, लखनऊ बैंक खाता सं. **680610100009948 IFSC: BKID0006806**

भारतीय स्टेट बैंक, निरालानगर, लखनऊ बैंक खाता सं. **30448433657 IFSC: SBIN0003813**

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।

कला के साथ नारी का सम्मान

कानपुर : ऑल इंडिया वुमेन डेवलेपमेंट एंड ट्रेनिंग सोसाइटी, चित्रा ग्रुप एवं बाबा शिव के संयुक्त तत्वाधान में शुभांजलि महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि महापौर प्रमिला पांडेय और राष्ट्रीय सचिव शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास दिल्ली के अतुल कोठारी ने किया। कार्यक्रम में समाज सेवियों, शिक्षाविद एवं कला के धनी 101 लोगों को सम्मानित किया गया। सम्मान पाने वालों में नमिता कटियार, कंचन मिश्रा, राजरानी, सुषमा निगम, ज्योति शुक्ला, रंजना यादव, रेखा श्रीवास्तव, सुबोध आर्या, निर्मल कपूर प्रमुख रहे। परिवार परामर्श केन्द्र के 40 सदस्य शामिल रहे। सम्मान समारोह के दौरान की नृत्य और गायन (डांसिग और सिंगिंग) के स्वर परीक्षण (ऑडिशन) भी हुए, जिसमें बच्चों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। संस्था की अध्यक्ष डॉ बिंदू सिंह और सर्वोत्तम तिवारी ने कहा कि प्रतियोगिता की अन्तिम परीक्षा 27 जनवरी 2019 को लाजपत भवन में होगी। इस मौके पर अशोक कुमार, सौरभ त्रिवेदी, रोहित राधा कृष्ण, युवराज चौहान, बब्बू मिश्रा, धर्मेंद्र कुमार, कमलेश कटियार, निर्मल कपूर मौजूद रहे।

शोक संवेदना संघ के प्रथम मुस्लिम प्रचारक का निधन

मुंबई (विसंकें). राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता तथा विश्व हिन्दू परिषद के कोंकण प्रांत धर्मजागरण आयाम के प्रमुख प्रल्हाद शिंदे (52) का निधन हो गया। मूलतः गुलशन अब्दुल्ला शेख (प्रल्हाद शिंदे) मुंबई के नजदीक माथेरान में अपने बाल्यावस्था से ही संघ से जुड़े। 1985 से 1991 तक उन्होंने संघ के पूर्णकालिक कार्यकर्ता (प्रचारक) के नाते अलग अलग जगह में कार्य किया। हिन्दू तत्वज्ञान से प्रेरित होकर उन्होंने आगे अपने परिवार के साथ हिन्दू धर्म में प्रवेश किया। उनकी अन्तिम यात्रा में समाज के विविध स्तर के नागरिक बड़ी संख्या में शामिल हुए।

गुलशन अब्दुल्ला शेख संघ के प्रथम मुस्लिम प्रचारक का निधन

उत्तम संगठक रहे शिंदे ने शालेय नौकरी करते हुए भी संघ के विविध दायित्व तत्परता से निभा। उनके पास विश्व हिन्दू परिषद और बजरंग दल के काम का दायित्व आया। श्रीरामजन्मभूमि यह उनकी रुचि का विषय था तथा रायगढ़ जिला के विविध मंदिरों के विश्वस्त, पुरोहित और धर्माचार्य के साथ उनका अच्छा संबंध था। स्वास्थ्य खराब होने के कारण उन्हें अस्पताल लाया गया। मेडिकल जांच में ब्रेन हैमरेज की पुष्टि होने पर उन्हें बॉम्बे अस्पताल और फिर पनवेल के पटवर्धन रुग्णालय में दाखिल करवाया गया। परंतु स्वास्थ्य में सुधार न होने के कारण उनका निधन हुआ। परिवार में पत्नी, पुत्र और पुत्री को पीछे छोड़ गए है।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास परिवार के हम सभी अधिकारी, कार्यकर्त्ता गुलशन अब्दुल्ला शेख से दुखी है। भगवान से उन्हें मोक्ष प्रदान करने की प्रार्थना के साथ उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते है।

सम्पादक : सेवा संवाद

प्रयाग-कुम्भ में महिलाओं का सम्मान

कुंभ और अर्द्धकुंभ में अखाड़ों की पेशवाई और शाही स्नान का एक अलग ही आकर्षण रहा है, वर्तमान में शैव, वैष्णव और उदासीन पंथ के संन्यासियों के मान्यता प्राप्त 13 अखाड़े हैं, इनमें से सात शैव अखाड़े हैं, जूना, निरंजनी, महानिर्वाणी, अटल, आह्वान, आनंद और अग्नि. तीन वैष्णव हैं, दिगंबर, निर्वाणी और निर्मोही तथा तीन उदासीन अखाड़े, बड़ा उदासीन, नया उदासीन और निर्मल। इन अखाड़ों की प्रतिनिधि समन्वयक संस्था अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद् के अध्यक्ष महंत नरेंद्र गिरि कहते हैं कि ये अखाड़े सनातन धर्म की रीढ़ हैं। आदिगुरु शंकराचार्य ने वैदिक संस्कृति के प्रचार – प्रसार के लिए इनकी बुनियाद सैकड़ों वर्ष पूर्व रखी थी।

अपाला, घोषा, सरस्वती, सर्पराज्ञी, सूर्या, सावित्री, अदिति – दाक्षायनी, लोपामुद्रा, विश्ववारा, आत्रेयी जैसी वेद मंत्रों की ऋषिकाएं हमारी आदर्श व प्रेरणास्रोत हैं।

जूना अखाड़े की ही एक अन्य महामंडलेश्वर श्रद्धा माता के मुताबिक वैदिक वांड्मय में स्त्रियों की शिक्षा–दीक्षा, शील, गुण, कर्तव्य, अधिकार और सामाजिक भूमिका का जैसा सुन्दर वर्णन पाया जाता है, वैसा संसार के अन्य किसी धर्मग्रंथ में नहीं। जूना अखाड़े की महिला साध्वियों की लंबे अरसे से चली आ रही पृथक महिला अखाड़े की मांग को स्वीकार करते हुए गत दिनों जूना पीठाधीश्वर ने अपने अखाड़े से जुड़ी महिला साध्वियों के 'माई बाड़ा' को अब 'दशनाम संन्यासिनी अखाड़ा' की स्वतंत्र मान्यता दे दी है। इस संन्यासिनी अखाड़े की अध्यक्ष लखनऊ के मनकामनेश्वर मंदिर की प्रमुख महंत दिव्या गिरि कहती हैं कि महिला साध्वियों की पृष्ठभूमि अत्यंत गौरवशाली है। महिला जब साध्वी बन जाती है तो उसकी ताकत और बढ़ जाती है। जब हम साधु–संन्यासी या संत के रूप में बोल रहे होते हैं तो स्त्री और पुरुष का भेद अपने आप मिट जाता है। वे बताती हैं कि 2003–04 के उज्जैन कुंभ के दौरान उनकी दीक्षा हुई थी। भारतीयता में संन्यास का जो मूल विचार है, वह बिना भेदभाव के समान रूप आत्म व जग कल्याण का है।

अखिल विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक/संरक्षक व गायत्री महाविद्यालय के सिद्ध साधक पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने बीती सदी में ही 'इक्कीसवीं सदी–नारी सदी' का उद्घोष करते हुए महिलाओं को गायत्री जप व यज्ञ संचालन का अधिकार देकर नारी शक्ति को धर्म मंच पर प्रतिष्ठित किया था।

महामंडलेश्वर श्रद्धा माता कहती हैं कि महिलाओं के संन्यासी बनने की राह आसान नहीं होती। जन सामान्य के मन में हमारे बारे में जानने की भारी उत्सुकता रहती है। संन्यासिनों को अखाड़े में माता की पदवी पाने के लिए 12 से 15 वर्ष तक कठोर ब्रह्मचर्य का पालन करना होता है। दीक्षा से पूर्व संन्यासिनों को खुद अपना पिंड तर्पण व मुंडन करना पड़ता है ताकि यह साबित किया जा सके कि अब उसका अपने परिवार और समाज से कोई संबंध व मोह नहीं है। उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य सिर्फ भगवद् भक्ति व जनकल्याण है।

इस कठिन तपश्चर्या के बाद जब गुरु को यह

बोध हो जाता है कि साधिका इस पथ पर चलने की पात्रता खुद में विकसित कर चुकी है, तभी उसे संन्यास की दीक्षा दी जाती है। पुरुषों की तरह ही अखाड़ों की महिला संन्यासियों के लिए भी अखाड़े के नियम निर्धारित हैं, जिनका पालन करना अनिवार्य होता है।

इन संन्यासिनों को सिर्फ एक भगवा वस्त्र व मस्तक पर तिलक धारण करना होता है। सुबह ब्रह्म मुहूर्त में उठकर नित्य कर्मों के बाद इष्ट का भजन–पूजन व जप तथा दोपहर में एक समय भोजन। भोजनोपरान्त पुनः जप–ध्यान व संध्याकाल में आरती–ध्यान के उपरांत शयन, अखाड़े के सभी साधु–संत उसे माता कहकर सम्बोधित करते हैं।

पूनम नेगी

❐

325 स्थानों पर 35 हजार लोगों का निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण

पटना दशम गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज के 352वें प्रकाश पर्व पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सेवा विभाग और एन.एम.ओ. के संयुक्त प्रयास से बिहार के 325 केंद्रों पर 35 हजार लोगों का निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। इन सभी केंद्रों पर 350 प्रशिक्षित चिकित्सकों ने अपनी सेवाएं दीं। इनके साथ 952 मेडिकल के विद्यार्थी भी पूरी तत्परता के साथ जुटे थे। सेवा भारती के 2500 स्वयंसेवक कार्यक्रम को सफल बनाने में जुटे थे।

केंद्रों के माध्यम से 35 हजार लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें आवश्यक परामर्श दिए गए। केंद्रों पर मुफ्त में दवा का वितरण भी किया गया।

एन.एम.ओ. के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. विजेंद्र ने बताया कि बिहार से रुग्णता समाप्त करने के लिए बिहार का चिकित्सक समुदाय संकल्पित है। सरकार की अपनी सीमाएं हैं। समाज के माध्यम से प्रति वर्ष संस्था द्वारा यह कार्यक्रम किया जाता है। सेवा भारती के कार्यकर्ताओं की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सेवा विभाग के सहयोग के बिना इतना बड़ा कार्यक्रम कर पाना असंभव था। यह प्रकल्प प्रति वर्ष आयोजित होगा।

❐

शिक्षा के माध्यम से भारत को खड़ा करना होगा

❑ डॉ. कृष्ण गोपाल

लखनऊ (विसंकें) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल जी ने कहा कि शिक्षा के माध्यम से फिर से भारत को खड़ा करना होगा। आने वाली पीढ़ी शिक्षा के साथ-साथ संस्कारवान बने, इसके लिए भी प्रयास करने की आवश्यकता है। सह सरकार्यवाह शनिवार को अर्जुनगंज के सरसवां में महामना शिक्षण संस्थान के भूमि पूजन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

डॉ. कृष्ण गोपाल ने कहा कि जब तक हिन्दू समाज की स्थिति नहीं बदलेगी, तब तक स्थायी परिवर्तन नहीं आ सकता। समाज से लेना बदले में दस गुना देना यह कृतज्ञता है। समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम भी समाज हित में अपना योगदान दें।

महामना मदन मोहन मालवीय का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि वे संस्कृत के विद्वान थे। वे भोजपुरी और ब्रज भाषा में भी कविता करते थे। कथा और पुरोहित का कर्म भी करते थे। अच्छे अधिवक्ता, महान शिक्षाविद व राजनेता भी थे। समाज के बल पर उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय बनाया। महामना की विरासत पर देश को गर्व है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्र डिग्री नहीं एक विचार लेकर निकलते हैं।

सह सरकार्यवाह जी ने कहा कि 1937 में भाऊराव देवरस उत्तर प्रदेश में संघ कार्य शुरू करने लखनऊ आए थे। उनका उद्देश्य बी.कॉम करना नहीं था। पण्डित दीन दयाल उपाध्याय, अटल बिहारी वाजपयी, अशोक सिंघल व रज्जू भैय्या को उन्होंने ही स्वयंसेवक बनाया।

बिहार के राज्यपाल लाल जी टण्डन ने कहा कि महामना देश में शिक्षा का दीप जलाने वाले स्तम्भ थे। बाबू श्याम सुन्दर दास को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ले जाने के लिए महामना लखनऊ आए थे। साधन की कमी पवित्र कामों में कभी नहीं

आती है। पूरा देश आज पुनर्जागरण में लगा है।

केजीएमयू के कुलपति प्रो. एम.एल.बी. भट्ट ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि महामना मदन मोहन मालवीय निःशुल्क शिक्षा के पक्षधर थे। महामना शिक्षण संस्थान से निर्धन मेधावियों को लाभ मिलेगा। गुणवत्तापरक शिक्षा हर व्यक्ति का मौलिक अधिकार है।

महामना शिक्षण संस्थान के सचिव रंजीव तिवारी ने कहा कि चार अध्ययन कक्ष, 1 हाल, 1 योग कक्ष, 40 आवासीय कक्ष, 1 प्रशासनिक कक्ष, 1 भोजनालय, 1 पुस्तकालय, 1 दवाखाना, 1 सभागार और दो अतिथि कक्ष बनेंगे। इस मौके पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के क्षेत्र प्रचारक अनिल जी, अवध के प्रान्त प्रचारक कौशल जी, सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे। ❐

युगान्तर भारती

युगान्तर भारती और नेचर फाउंडेशन के सौजन्य से राजभवन स्थित ऑडे हाउस सभागार में सप्ताह व्यापी **पर्यावरण मेला का समापन विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सम्पन्न हुआ।** कार्यक्रम का उद्घाटन महामहिम राज्यपाल महोदया द्रौपदी मुर्म ने किया। पर्यावरण को आधार में रखकर ठोस कचरा प्रबंधन, पर्यावरण साहित्य सम्मेलन, अनुवांशिकी विविधता, पर्यावरण कानून पर राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन हुआ। जिसमें मेघालय के महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद, केन्द्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद, डॉल्फिन मैन पद्मश्री आर. के. सिन्हा, सिंह कान्हू मुर्मू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर मनोरंजन प्रसाद सिन्हा एवं झारखण्ड के अन्य विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने भाग लिया। पर्यावरण साहित्य सम्मेलन प्रोफेसर अशोक प्रियदर्शी के संयोजकत्व में हुआ। विषय प्रवेश लेखक डॉ. रणेन्द्र कुमार, भा. प्र. से. ने किया। प्रगति वार्ता के प्रधान संपादक डॉ. रामजन्म मिश्र ने अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। संध्याकाल में कार्यक्रमों का आयोजन होता रहा जिसका उद्घाटन पंडवानी गायिका रितु वर्मा ने किया।

सभी संगोष्ठियों की अध्यक्षता युगान्तर भारती और नेचर फाउंडेशन के संरक्षक झारखण्ड सरकार के मंत्री सरयू राय ने किया। इस अवसर पर विभिन्न विभागों की प्रदर्शनियों के साथ ही सागरमाला कार्यक्रम के अतंर्गत साहिबगंज में बने रहे बन्दरगाह की भी प्रदर्शनी लगाई गई थी। पर्यावरण दिवस के अवसर पर कार्यकर्ताओं समाजसेवियों पर्यावरण के प्रति समर्पित व्यक्तियों को सम्मानित किया गया। डॉ. रामजन्म मिश्र को उनकी सहभागिता एवं उपलब्धियों के लिये पद्मश्री अशोक भगत, कुलपति रांची विश्वविद्यालय रमेश पांडे, माननीय मंत्री एवं कार्यक्रम के अध्यक्ष सरयू राय ने प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में संस्थाओं में दामोदर बचाओ आन्दोलन सारंडा बचाओ आंदोलन, स्वर्ण रेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट, जल जागरूकता अभियान, देवनंद दामोदर क्षेत्र विकास ट्रस्ट के संयोजकों को भी सम्मानित किया गया। ❐

"सेवार्थ"

आदमी को आदमी के
काम आना चाहिए,
आपसी सौहार्द्र की
गंगा बहाना चाहिए।
हर तरफ उसकी खुदाई
का है जलवा देखिए,
गीत उसके ही हमें
रोज गाना चाहिए।
फूल होंगे शूल होंगे
जिदन्गी की बाग में,
प्यार, शुचि विश्वास का
अद्भुत तराना चाहिए।
रोते–रोते यह, सफर
हर्गिज नही कट पाएगा,
जब कभी मौका मिले,
हँसना–हँसाना चाहिए।
हम जगत में आए हैं
सबकी भलाई के लिए,
फर्ज हम सबको 'अखिल'
अपना निभाना चाहिए।

अखिलेश निगम 'अखिल'

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र

सेवा संवाद

सम्पादकीय कार्यालय : **भाऊराव देवरस सेवा न्यास**
सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020
दूरभाष : 0522-4001837, 2789406 मोबाइल : 9793120738
Email : sewasamwad@gmail.com

ग्राहक सदस्यता प्रपत्र

सेवा में,

प्रबन्धक,
'सेवा संवाद'
भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020

महोदय,

मैं/हमारी संस्था आपकी मासिक पत्रिका सेवा संवाद का वार्षिक/जीवन सदस्य बनने का इच्छुक हूँ/हैं। इस निमित्त वार्षिक शुल्क **200/-** अथवा आजीवन शुल्क **2000/-** रुपये **'सेवा संवाद'** के पक्ष में नकद/बैंक ड्राफ्ट/चेक सं. ..... दिनांक ..... बैंक .... द्वारा भेज रहा हूँ/रहे हैं। कृपया स्वीकारें। प्राप्ति की रसीद तथा पत्रिका हमारे निम्न पते पर प्रेषित करने की कृपा करें।

ह0 आवेदक

हमारा पता है :
नाम : .....
पता : .....
.....
.....
जिला: .....
प्रदेश : ..... पिन: .....
मोबाइल: .....

आलोक : चेक/ड्राफ्ट 'सेवा संवाद' के पक्ष में जारी करें अथवा बैंक आफ इण्डिया, निरालानगर, लखनऊ के खाता सं. 680610110000102 (IFSC : BKID0006806) में सीधे जमा कर जमा पर्ची की छायाप्रति के साथ सूचित करें।

देवपुत्र गौरव सम्मान समारोह सम्पन्न

दो दिवसीय महिला बाल साहित्यकार सम्मेलन सम्पन्न

इन्दौर सरस्वती बाल कल्याण न्यास द्वारा प्रकाशित देवपुत्र बाल मासिक के सप्तम देवपुत्र गौरव सम्मान 2018 का आयोजन देवपुत्र सभागार में सम्पन्न हुआ। पटना के सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी को विद्याभारती के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी (नई दिल्ली) एवं प्रख्यात साहित्यकार लीला मेंहदले (पुणे) सहित देशभर से उपस्थित महिला बाल साहित्यकारों की सारस्वत उपस्थिति में मानपत्र, शाल, श्रीफल, स्मृति चिन्ह एवं सम्मान निधि भेंट कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर देवपुत्र द्वारा आयोजित विभिन्न पुरस्कार एवं सम्मान भी प्रदान किए गए। मायाश्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार पद्मा चौगांवकर (गंजबासौदा) को उनकी बाल कहानी संग्रह 'सतरंगी कहानियाँ' के लिए प्रदान किया गया। डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्यकार पुरस्कार के विजेता डॉ. लता अग्रवाल एवं डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' को प्रताप सम्मान, राजेन्द्र कोचला 'अम्बर' को उनकी कृति क्रांतिकारी और उनके अमर पत्र के लिए सम्मनित किया गया। समारोह का संचालन डॉ. विकास दवे एवं आभार प्रदर्शन प्रबंध न्यासी राकेश भावसार ने किया।

सरस्वती बाल कल्याण न्यास द्वारा आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय महिला बाल साहित्यकार सम्मेलन भी देवपुत्र सभागार में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में विविध सत्रों में डॉ. विमला भण्डारी, सलुम्बर (राजस्थान), डॉ. लीना मेंहदले, पुणे (महाराष्ट्र), पवित्रा अग्रवाल, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश), डॉ. इन्दुराव, गुरुग्राम (हरियाणा), डॉ. प्रभा पंत, हल्द्वानी (उत्तराखण्ड), सहित अन्य व स्थानीय महिला बाल साहित्यकारों ने संस्कारक्षम बाल साहित्य लेखन–लेखिकाओं की सहजवृत्ति, बाल साहित्य में उपदेश का निषेध कितना उचित?, बाल साहित्य : बालिका विमर्श को कितना स्थान?, आध्यात्मिक जीवन मूल्य देने में समर्थ लेखनधर्मी मातृशक्ति, ओजस्विनी/तेजस्विनी बालिकाएं कैसे साकार रहें?, वर्तमान बाल साहित्य में सूखती वात्सल्य रसधारा जैसे विषयों पर सार्थक विमर्श सम्पन्न हुआ।

सम्मेलन का उद्घाटन सत्र स्वामी विवेकानंद जी को समर्पित रहा। उनकी जयंती के उपलक्ष्य में शारदामठ इन्दौर की परिव्राणिक पूज्या अमितप्राणा जी (माताजी) एवं डॉ. विमला भण्डारी ने मार्गदर्शन दिया। कृष्ण कुमार अष्ठाना ने विवेकानंद जी की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। महिला बाल साहित्यकार सम्मेलन के द्वितीय दिवस विभिन्न कृतियों का लोकार्पण किया गया।

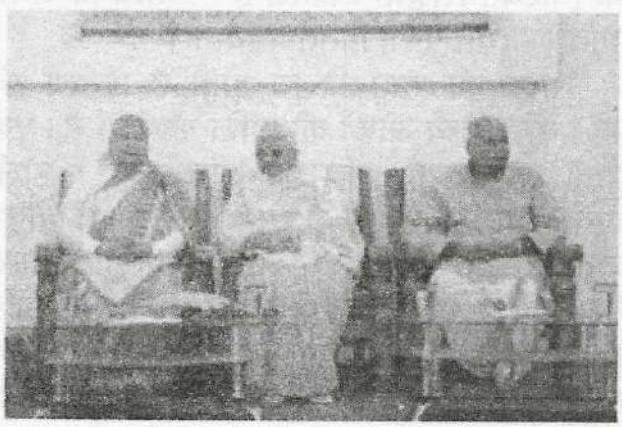

आनंद का त्यौहार होली

आनंद और सुख–भोगों में पड़कर जीवन विलास–प्रिय और आलसी न बन जाए, यह होली का दिव्य संदेश है। इस सम्बन्ध में एक बड़ी मार्मिक और प्रसिद्ध कथा है–इस कथा में शिव–तत्व का भव्य दर्शन है। शिव उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर ध्यानावस्थित थे। कामदेव ने अपने शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध के पाँच बाणों से उन पर प्रहार किया। शिव ने अपने तप का तीसरा नेत्र खोल दिया और काम भस्म हो गया। होली इसी तप योग और संयम के प्रेरक मदन–दहन–उत्सव का दिव्य संदेश लेकर आती है। काम–रहित जीवन में बसंत का सुख सौगुना हो जाता है।

होली का दिव्य रूप–विष–पान

वर्तमान में प्रत्येक नगर और परिवार में नये–नये संघर्षों से, परस्पर मत–भेद और लड़ाई–झगड़ों का विष फैल रहा है। इस विष से सर्वत्र अशांति फैलती है–नर–नारी झुलसने और जलने लगते हैं। जो इस विष को पी लेता है वही शिव है, उसी से आनंद और मंगल की वृद्धि होती है। होली पर जो मादक पदार्थ पीने की प्रथा है उनका वास्तविक रूप परस्पर कलह, क्रोध आदि का विष–पान है। विनम्रता, सहनशक्ति, क्षमा और प्रसन्नता में होली का रहस्य है।

सांस्कृतिक होली

होली का सांस्कृतिक स्वरूप, पवित्रता और प्रेम का प्रतीक है। पवित्र जीवन की दृढ़–शिला पर उन्नति का भवन खड़ा होता है। पवित्रता का मेरुदण्ड सत्य है। महापुरुषों के अनुभव से छनकर एक निश्चित सिद्धांत निकला है – "सत्यमेव जयते नानृतन् सत्येन पन्था विततेदेवयानः।"

सत्य की सदा विजय होती है असत्य की नहीं। सत्य दिव्य लोकों की प्राप्ति का मार्ग है। एक पुरानी कहावत है–सांच का आंच कहाँ ? होली अपनी सहस्रों ज्वालाओं से इस कहावत की प्रतिष्ठा करती है। प्रहलाद ने प्रेम और पवित्रता का नारा ऊँचा उठाया था समता के व्यवहार से वह जन–जन का हृदय–सम्राट बन गया। सेवा की वेदी पर उसने अपना जीवन चढ़ा दिया और भक्ति तथा सत्य के मंगल मार्ग पर अग्रसर हुआ। साम्राज्यवादी हिरण्यकशिपु, अपने ही पुत्र की लोकप्रियता को न देख सका। प्रहलाद के उदार और सम व्यवहार से उसे अपनी आसुरी नीति के अंत होने की आशंका हो गई। असभ्य, घृणा, अत्याचार और निरंकुशा के सन्मुख प्रहलाद सत्याग्रह करके खड़ा हो गया। हिरण्यकशिपु की दमन नीति प्रहलाद को विचलित न कर सकी। अंत में प्रहलाद को जला देने के लिए होलिका उसे गोदी में लेकर बैठ गई। सत्य की महिमा अपार है। होलिका अपनी ज्वालाओं में जल गई और प्रहलाद ज्यों का त्यों रहा "सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन्।" जनता के सेवकों को सत्य की नाव पार लगाती है।

आनंद की बौछारें

सत्य के साथ–साथ होली सुंदरता का भी संदेश देती है। सुंदरता का मूल–मंत्र प्रसन्नता है। मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनने के लिए जितनी शिक्षा, ज्ञान और बुद्धि की आवश्यकता है प्रसन्नता की। प्रसन्नता ही जीवन है, वह सौभाग्यशाली है, जिसके मुख पर प्रसन्नता खेलती है। जीवन में सत् और चित् का भाव रहता है परंतु आनंद किसी ही सुकृति को प्राप्त होता है। आनंद के मिलते ही जीव सच्चिदानन्दमय हो जाता है।

क्षुद्र और संकीर्ण जीवन में आनंद नहीं रहता। निराशा, मलिन और उदास जीवन से मृत्यु का बल बढ़ता है। होली आनंद की बौछारों से जीवन को तर कर देती है, समष्टि के बीच में लाकर मनुष्य को उमंग और उत्साह से भर देती है। सार्वजनिक उत्सव से संगठित–शक्ति, प्रेम और सद्भाव का उपहार देती है।

जीवन का आदर्श

जिसे चाह और चिंताओं से छुट्टी नहीं मिलती, वह सबसे बड़ा रोगी है। जिसके मन में घुन लग जाता है वही दुःखी है। आलसी, शिथिल, दीन, प्रगतिहीन और निस्तेज होकर जीना केवल सिसकते हुए सांस लेना है, उसमें जीवन नहीं होता। जीवन का दर्शन वहाँ होता है जहाँ कर्म का बोझ मन और बुद्धि को नहीं झुका पाता। उमंग और उत्साह

के हाथ–पैर नहीं टूटते, प्रसन्नता कुम्हलाती नहीं और आत्मा सदा हंसती खेलती रहती है।

प्रेम

होली उत्सव में जितना स्थान प्रसन्नता को मिलता है, उससे अधिक प्रेम को दिया जाता है। अपनी ही प्रसन्नता नहीं, प्रेम और सद्भाव से सबकी प्रसन्नता होली का ध्येय है। भारतीय संस्कृति में "वसुधैव कुटुम्बकम" की विराट कल्पना है। उदार पुरुषों के लिए सादा विश्व अपना ही परिवार है। संसार में सब अपने हैं, कोई दूसरा नहीं है। इस महाभाव का रचनात्मक रूप होली के उत्सव में देखा जाता है। प्रेमपूर्वक अपरिचित सबको हृदय से लगाकर सद्भावना सहित पुष्पमाला पहनना, चंदन–गुलाल, अबीर आदि मांगलिक चिन्ह लगाना–परस्पर प्रेम, मैत्री मुदिता के द्योतक हैं। उन्नत राष्ट्रों में प्रेम और सद्भाव की सहस्त्रमुखी धाराएँ बहती है। प्रेम परमेश्वर का रूप है। प्रेम के बिना संसार सूना और नीरस है।

ऊँच–नीच के भेद–भाव, राग–द्वेष, प्रान्तीयता और दलबन्दी को होली की पवित्र अग्नि मे भस्म कर देने से दशों दिशाओं में प्रकाश, प्रेम और मंगल भर जाता है। कठोर और गंदे शब्द बकने, किसी को हृदय दुखाने और उन्मत्त होने में होली है। होली आती है–खेलने–कूदने और प्रसन्न होने के लिए हृदय के कोने–कोने का मैल धो डालने के लिए विश्व को शांति, प्रेम, मैत्री, करुणा और मुदिता के एक रंग में रंग देने के लिए। राष्ट्र के नव–निर्माण के लिए प्रेम, सद्भावना, चरित्र, उत्साह, कर्मशीलता और प्रसन्नता की आवश्यकता है, उसे जुटा देने के लिए होली का उत्सव है।

कृष्णचन्द्र टवाणी
प्रधान संपादक "अध्यात्म अमृत"
सिटी रोड, मदनगंज–किशनगढ़
(राज.) 305801
मो. 9252988221

पवित्र होली का त्यौहार मनाओ

बड़े भाग्य से होली आई।
इसने सबकी सोई मस्ती जगाई।।
धरती सज धज मुस्काई।
फसल लहर–लहर लहराई।।
फिर क्यों न सब मिलकर।
हर्षित हो नाचो खुशी मनाओ।।

पवित्र होली का त्यौहार मनाओ

रंगों से भर पिचकारी लाओ।
आपस में फिर रंग लगावो।।
खूब अबीर गुलाल उड़ाकर।
अपना प्रबल प्रेम दिखलावो।।
आपस के मतभेद भुलाकर।
दुश्मन को भी गले लगाओ।।

पवित्र होली का त्यौहार मनाओ

प्रेम भाव से सब मिलकर जुलकर।
चंग बजाओ रसिया गाओ।।
मधुर–मधुर मिष्ठान बनाओ।
प्रेम पूर्वक सबको खिलाओ।
वासनाओं को दूर हटाकर।
होली का आदर्श त्यौहार मनावो।

पवित्र होली का त्यौहार मनाओ

अभूतपूर्व है प्रयागराज का कुम्भ

❑ भूमिका राय

कुम्भ पर्वों की उत्पत्ति समुद्र–मंथन से हुई। देवता और राक्षस मन्दराचल पर्वत के चारों ओर वासुकि नाग को लपेट कर जब समुद्र को मथ रहे थे, तो बारी–बारी से चौदह रत्न महासमुद्र के गर्भ से प्रकट हुए। इनमें से एक विष भी था जिसे कण्ठ में धारण कर भगवान पिनाक–पाणि नीलकण्ठ कहलाये। अंतिम अर्थात चौंदहवी वस्तु 'अमृत' थी। अमृत पर अधिकार के लिए देवताओं व राक्षसों में संघर्ष होने लगा तो 'अमृत–कुम्भ' की रक्षा के लिये विष्णु के वाहन गरुड़ (मतान्तर से इन्द्र–पुत्र जयंत) इस कुम्भ को ले भागे। देव–गुरु बृहस्पति, सूर्य तथा चन्द्रमा भी गरुड़ के साथ थे। बृहस्पति चारों ओर की चौकसी कर रहे थे, सूर्य देवता यह देख रहे थे कि भागम–भाग में कुम्भ टूट न जाये तथा चन्द्रमा कुम्भ से अमृत न छलके, यह सुनिश्चित कर रहे थे। इतनी सावधानी के बाद भी अमृत की बूंदे चार स्थानों पर छलक गईं। जहाँ अमृत टपका, वे चार स्थान हरिद्वार, प्रयाग, उज्जयिनी तथा नासिक हैं।

देव–गुरु बृहस्पति

अमृत के लिये राक्षस और देवताओं में बारह दिनों तक संघर्ष हुआ, अतः उक्त चारों अमृत–मय तीर्थ–स्थानों पर बारह वर्ष में एक–एक बार कुम्भ का आयोजन होता है। तीन वर्ष में एक बार बारी–बारी से हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन तथा नासिक में यह महापर्व आता हैं बृहस्पति, सूर्य तथा चन्द्रमा अमृत की रक्षा कर रहे थे, अतः कुम्भ की तिथियों का सम्बन्ध भी इन तीनों ग्रहों से है। (ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सूर्य भी ग्रह है) देव–गुरु बृहस्पति लगभग बारह वर्ष में शचक्र हैं। प्रत्येक राशि में वे लगभग एक वर्ष रहते हैं।

बृहस्पति जब वृष राशि में आ जाये तों कुम्भ–पर्व प्रयाग में आयोजित होता है। सिंह राशि में बृहस्पति के स्थित होने पर कुम्भ उज्जैन में सम्पन्न होता है, इसीलिये इसे 'सिंहस्थ–पर्व' भी कहते हैं। वृश्चिक राशि में बृहस्पति के गोचर के समय नासिक तथा कुम्भ राशि में होने पर हरिद्वार में इस महापर्व का आयोजन होता है।

सूर्य देव के लिए तीन राशियाँ महत्वपूर्ण हैं। सूर्य सिंह राशि के स्वामी हैं अर्थात 'सिंह' सूर्य की स्वराशि है। मेष में सूर्य उच्च के होते हैं तथा मकर राशि में प्रवेश के साथ भुवन–भास्कर दक्षिणायन से उत्तरायण की ओर चलने लगते हैं। इसीलिये वृष राशि में बृहस्पति के समय जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करते हैं, उस समय प्रयाग में कुम्भ पर्व के आयोजन का योग बनता है।

स्कन्द पुराण में कहा गया है–

मकरे च दिवानाथे वृशगे च बृहस्पतौ।
कुम्भयोगी भवेत्तत्र प्रयागे ह्मातिदुर्लभः।।

साधारणतः मकर संक्रान्ति से प्रयाग में कुम्भ प्रारम्भ होता है एवं महाशिवरात्रि तक यह पूर्ण होता है। इसी प्रकार सिंह के बृहस्पति के समय सूर्य के मेष राशि में प्रवेश करने पर उज्जयिनी में तथा वृश्चिक के बृहस्पति के समय सूर्य की सिंह – संक्रांति पर नासिक में इस पर्व का आयोजन होता है। सभी कुम्भों में प्रमुख स्नान चन्द्रमा की स्थिति के अनुसार सुनिश्चित किये जाते हैं।

स्कन्द पुराण में ही हरिद्वार के महापर्व का भी निम्न संदर्भ है–

पद्मिनीनायके मेशे कुम्भराशि गते गुरौ।
गंगाद्वारे भवेद्योगः कुम्भ नाता तदोत्तमः।।

अर्थात जिस वर्ष कुम्भ राशि में गुरु होते हैं उस वर्ष के मेष संक्रमण के समय हरिद्वार में परमोत्तम कुम्भ पर्व का योग होता है यहाँ का पर्व मकर संक्रमण से प्रारम्भ होता है तथा सूर्य की मेष संक्रान्ति के समय पूर्ण होता है।

अर्द्धकुम्भ :

वर्ष 2007 में नासिक में महाकुम्भ होना था। कुम्भ पर्व की अवधि में गुरु के वक्री होने के कारण यह आयोजन नहीं हो सका। अतः उस वर्ष प्रयाग में मकर–संक्रमण से अर्द्धकुम्भ हुआ। ऐसी ही स्थितियों में अर्द्धकुम्भ आयोजित होते हैं। वर्ष 2001 के बाद प्रयाग में छह वर्षों के बाद ही यह पर्व आया इसीलिए इसे अर्द्धकुम्भ कहा गया।

वर्ष 2007 के बाद 2013 जब बृहस्पति वृष

राशि में आये तो पुनः प्रयागराज में पूर्ण–कुम्भ का आयोजन हुआ। उस समय गुरु वृश्चिक राशि में है अतः नासिक में महाकुम्भ होना चाहिए था किन्तु वहाँ तीन वर्ष पहले महाकुम्भ हो चुका है। अतः प्रयागराज में इस बार अर्द्ध–कुम्भ सम्पन्न हो रहा है। राज्य सरकार ने इसे कुम्भ और पूर्ण कुम्भ को महाकुम्भ नाम दिया है।

कभी–कभी कुम्भ पर्व 11 वर्षो में ही आ जाता है। हरिद्वार में आगामी महाकुम्भ 11 वर्ष बाद ही सन् 2021 में आयोजित होगा। यह 'गुरु' की गति के कारण है। शचक्र की एक परिक्रमा अर्थात सभी बारह राशियों में बृहस्पति को 11 वर्ष 11 माह तथा 27 दिन का समय लगता है। इस प्रकार बारह वर्षों में पचास से अधिक दिन का अंतर आ जाता है। जो सातवें व आठवें कुम्भ के बीच बढ़ कर एक वर्ष का हो जाता है। इसीलिए आठवाँ कुम्भ ग्यारह वर्षों की अवधि में ही आ जाता है। अन्य तीन स्थानों के भी कुम्भ 2021 के पश्चात् 11 –11 वर्षों की अवधि के बाद ही होंगे।

❐

दान की एकाधिकता

समूचे भारत में अराजनैतिक कार्यों के लिए, अर्थात सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक, सेवा सम्बन्धित कार्यों के लिय प्रवास करने वाले समाजसेवक को एक छोटा–सा अनुभव होता है। छोटा–बड़ा दान देते समय दी हुई मुख्य राशि के साथ एक रुपया अतिरिक्त दिया जाता है। एक सौ एक, पाँच हजार एक, एक लाख एक ऐसा दिया जाता है। पूरे देश में इस व्यवहार में समानता दिखाई पड़ती है। भारतीय सांस्कृतिक एकता का यह उत्तम उदाहरण है।

इसका तात्पर्य पूछने पर एक सामान्य साथी ने उत्तर दिया हमारी कल्पना में दान का कभी अन्त नहीं होता। दान का सही अर्थ दिया हुआ धन नहीं, प्रगट किया हुआ भाव है। दान–संख्या का अन्त होता है, परन्तु दानभाव का नहीं। वह तो अन्तःकरण की वृत्ति है, जिसका अन्त नहीं होता। सामान्यतः शून्य अन्त का परिचायक है। हमारी परम्परा सूचित करना चाहती है कि आप जैसे धार्मिक सज्जन का यह कल्याणकारी भाव चिरंतन अटूट रहे और उसका संकेत है 'और एक' अथवा 'एकाधिक'। अतः एक सौ नहीं, एक सौ एक।

आधुनिक वैज्ञानिक वातावरण में इस तत्व का तात्पर्य आसानी से समझा जा सकता है। सुनिश्चित क्षण पर राकेट का लाँचिंग तय किया जाता है, और ऊपर से उलटी गिनती प्रारम्भ होती है। अन्त में वह शून्य पर आकर रुक जाती है, अर्थात शून्य अन्त है, जिसके परे कुछ नहीं। मनुष्य की वृत्ति इस प्रकार की न हो, उसका क्षितिज अनन्त हो, उसके अनुसार उसका व्यवहार हो, इस प्रकार अत्यन्त मूल्यवान भव्य सांस्कृतिक विधान है, 'दान की एकाधिकता'।

स्वल्पाधिकता

दान में जैसे एकाधिकार की बात कही वैसे बिक्री में स्वल्पाधिकता की बात भी है। क्या है यह स्वल्पाधिकता ? वह भारत में आसेतुहिमाचल चलती आती प्रथा है। जब हम कोई चीज खरीदते हैं तब दुकानदार तोलकर या गिनकर पूरी चीज देने के बाद और थोड़ा उसमें डालते हैं। धान खरीदने वाले के बोरे में बेचने वाला किसान और एक मुठ्ठी धान डालता है। दूध बेचने वाला एक चम्मच अधिक डालता है। ठेली–दुकान में मूँगफली बेचने वाला भी पोटली में और दो दाने डालता है। नारियल बेचनेवाले सौ गिनकर पाँच या दस अतिरिक्त देते हैं। इस प्रथा को स्वल्पाधिकता कहा। आजकल राशन दुकान, डिपार्टमेंटल स्टोर, माल्ट संकुल आदि के मंच प्रवेश के कारण वह प्रथा लुप्त हो रही है। शहरों में उसका अन्तर्द्धान हुआ, परन्तु गाँव की मण्डी में आज भी दृश्यमान हैं।

❐

व्रत-त्यौहार मार्च 2019

दिनांक	दिन	व्रत–त्योहार
2	शनिवार	विजया एकादशी व्रत महर्षि दयानन्द सरस्वती जयंती
3	रविवार	प्रदोष व्रत
4	सोमवार	महाशिवरात्रि
6	बुधवार	स्नानदान श्राद्ध की अमावस्या
8	शुक्रवार	रामकृष्ण परमहंस जयंती चन्द्रदर्शन
9	शनिवार	मधुक तृतीया, रज्जब माह शुरु
10	रविवार	वैनायकी गणेश चतुर्थी
11	सोमवार	यज्ञवलक्य जयन्ती
13	बुधवार	कामदा सप्तमी, कल्याण 7
14	गुरुवार	होलाष्टक, सीता अष्टमी
15	शुक्रवार	आनन्द नवमी
17	रविवार	आमल की एकादशी, रंगभरी
18	सोमवार	प्रदोष व्रत, मेला श्री श्यामजी खाटू वाले
19	मंगलवार	नन्द त्रयोदशी
20	बुधवार	होलिका दहन, पूर्णिमा व्रत
21	गुरुवार	होली, धुरण्डी
24	रविवार	संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी
26	मंगलवार	बुढ़वा मंगल
28	गुरुवार	शीतलाष्टमी, संतानाष्टमी
31	रविवार	पापमोचनी एकादशी व्रत

सेवा हि परमोधर्मः

पॉवर ग्रिड, विश्राम सदन, नई दिल्ली

लाभार्थी संख्या विवरण

14 जनवरी 2018 से 31 जनवरी 2019

		माह जनवरी 2019
1	असम	9
2	बिहार	318
3	छत्तीसगढ़	6
4	हरियाणा	11
5	जम्मू काश्मीर	21
6	झारखंड	40
7	केरल	5
8	मध्य प्रदेश	93
9	मनीपुर	3
10	उड़ीसा	6
11	पंजाब	3
12	राजस्थान	46
13	त्रिपुरा	4
14	उत्तरांचल	38
15	उत्तर प्रदेश	309
16	वेस्ट बंगाल	35
17	नेपाल	19
	कुल सदस्यों की संख्या	966

नेत्र कुम्भ - प्रयागराज

(लाभार्थी संख्या विवरण)

दिनांक 19 फरवरी 2019 तक

कुल नेत्र रोगी	140639
चश्मा वितरित	105036

पावन स्मृति

{पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्व समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया, अपने बहुआयामी कार्यो द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्गदर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्रोत हैं ऐसे उन तमाम दिव्य महापुरूषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित है–सम्पादक}

दिनांक	दिवस	महापुरुष का नाम
1 मार्च 2019	बलिदान दिवस	क्रान्तिवीर गोपीमोहन साहा
2 मार्च 2019	जन्मदिवस	राष्ट्रवादी इतिहासकार पुरूषोत्तम नागेश ओक
3 मार्च 2019	पुण्य तिथि	स्वतन्त्रता सेनानी : लाला हरदयाल
3 मार्च 2019	जन्मदिवस	करगिल युद्ध का सूरमा संजय कुमार
4 मार्च 2019	पुण्य तिथि	सैनिक शिक्षा के पुरोधा धर्मवीर डा0 मुज्जे
4 मार्च 2019	पुण्य तिथि	क्रान्तिकारी की मानव कवच तोसिको बोस
6 मार्च 2019	बलिदान दिवस	धर्मवीर : पण्डित लेखराम
8 मार्च 2019	जन्मदिवस	महान् विट्ठलभक्त : सन्त तुकाराम
9 मार्च 2019	पुण्य तिथि	नारी संगठन को समर्पित सरस्वती ताई आप्टे
10 मार्च 2019	इतिहास–स्मृति	जब भारतीय बन्दी अन्दमान पहुँचे
11 मार्च 2019	जन्मदिवस	सिन्धु का क्रान्तिवीर : हेमू कालाणी
11 मार्च 2019	बलिदान दिवस	सम्भाजी का हिन्दुत्व के लिए बलिदान
12 मार्च 2019	पुण्य तिथि	चन्द्रशेखर आजाद के साथी डा0 भगवानदास माहौर
14 मार्च 2019	बलिदान दिवस	पेशावर पर भगवा लहराया
14 मार्च 2019	जन्मदिवस	वैदिक गणित के संन्यासी प्रवक्ता
15 मार्च 2019	जन्मदिवस	समर्पित व्यक्तित्व : सुनील उपाध्याय
16 मार्च 2019	जन्मदिवस	जिन्होंने अटल जी को स्वयंसेवक बनाया
18 मार्च 2019	प्रकाशन–तिथि	स्वाधीनता का गौरव ग्रन्थ
20 मार्च 2019	बलिदान दिवस	वीरता की प्रतिमूर्त्ति अवन्तीबाई लोधी
20 मार्च 2019	जन्मदिवस	कला प्रेमी संगठन डा0 शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव
21 मार्च 2019	जन्म–तिथि	विश्वविख्यात खगोलशास्त्री : आर्यभट
21 मार्च 2019	जन्म–तिथि	विश्वनाथ के आराधक : बिस्मिल्ला खाँ
23 मार्च 2019	बलिदान दिवस	इन्कलाब जिन्दाबाद
23 मार्च 2019	जन्मदिवस	कृष्ण प्रेम में दीवानी मीराबाई
24 मार्च 2019	बलिदान दिवस	पाच्चाल क्षेत्र में क्रान्ति के संचालक नवाब खान
25 मार्च 2019	बलिदान दिवस	गणेशशंकर विद्यार्थी का बलिदान
26 मार्च 2019	जन्मदिवस	मनीषी चिन्तक : कुबेरनाथ राय
27 मार्च 2019	बलिदान दिवस	क्रान्तिवीर काशीराम जिन्हें डाकू समझा गया
28 मार्च 2019	पुण्य तिथि	समग्र मानवता के धर्माचार्य आचार्य आनन्दऋषि
29 मार्च 2019	पुण्य तिथि	सेवा और समर्पण के अनुपम साधक गुरू अंगद देव
29 मार्च 2019	जन्मदिवस	नयी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर भवानी प्रसाद मिश्र
30 मार्च 2019	जन्मदिवस	आदर्श कार्यकर्त्ता : अप्पा जी जोशी

पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्वास्थ्य सेवा केन्द्र

ग्राम परतोष, अमेठी (उ.प्र.)

अनुरोध

जिनकी कथनी और करनी में सदैव एकरूपता रही हो, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मातृभूमि के चरणों में अर्पित कर दिया हो, जो अकृत्रिमता से दूर, सहज, स्वाभाविक, सादा रहन-सहन और उच्च विचारों के धनी रहे हों, ऐसे समाज सेवी, कुशल संगठक, राष्ट्रभक्त श्रद्धेय पं. दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर 1916 ई. को नगला चन्द्रभान, फरह, मथुरा (उ.प्र.) में हुआ था। बाल्यकाल से ही वे संवेदनशील रहे। उनके हृदय में समाज के निर्बल, पिछड़े, बनवासी, ग्रामीण, अनाश्रित, वृद्ध, अनपढ़-बालक, रोगी-पीड़ित सभी के प्रति मानवीय करुणा थी, उनके एकात्म मानव दर्शन और अन्त्योदय की भावना तथा समाज और राष्ट्र को समुन्नत करने के स्वप्न को साकार बनाने तथा आगे बढ़ाने की पवित्र भावना के साथ पंडित दीनदयाल जी की जन्मशती पर उनके प्रति आदर-सम्मान व्यक्त करने के लिए ग्राम परतोष, जिला अमेठी में पं. दीनदयाल उपाध्याय स्वास्थ्य सेवा केन्द्र की स्थापना का निर्णय लिया गया। इस निमित्त 20400 वर्गफुट जमीन क्रय कर ली गई है। अगला महत्त्वपूर्ण चरण निर्माण कार्य का है, जिसके लिए सहयोगी बन्धुओं से आर्थिक सहकार प्राप्त हो रहे हैं। इस महान यज्ञ कार्य में आहुति के लिए आप भी अपने सहकार से अनुगृहीत करें, यही आपसे विनती और प्रार्थना है।

कृपया अपनी सहयोग राशि भाउराव देवरस सेवा न्यास के पक्ष में चेक/ड्राफ्ट जो लखनऊ में देय हो, भेजने की कृपा करें। अथवा RTGS/NEFT के लिए Bhaorao Deoras Seva Nyas A/c No. 30448433657 State Bank of India, Daliganj (Niralanagar) Lucknow (IFSC Code: SBIN0003813) में धनराशि जमा कराकर अपने पैन नं. एवं पते के साथ कार्यालय के पते (सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020 दूरभाष 0522-4001837 मो. 9450020514) पर हमें सूचित करें।

– राजेश (संयोजक)
मो. 9793120738

भाऊराव देवरस सेवा न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5)(vi) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। न्यास का PAN AAATB1049G है।

पंडित दीन दयाल उपाध्याय की जीवन गाथा पर आधारित नौटंकी "दीन-जन प्यारे"

भाऊराव देवरस सेवा न्यास की ओर से नौटंकी "दीन जन प्यारे" का प्रदर्शन किया गया

लखनऊ 30 जनवरी। भाऊराव देवरस सेवा न्यास की ओर से पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में सत्य समर्पण संस्था की ओर से पंडित दीन दयाल उपाध्याय के जीवन वृत पर आधारित नौटंकी दीनजन प्यारे का प्रदर्शन बुधवार को अंतरराष्ट्रीय बौद्ध शोध संस्थान के ऑडिटोरियम में अमित दीक्षित की परिकल्पना, लेखन, संगीत और निर्देशन में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रमुख सचिव खादी ग्रामोद्योग नवनीत सहगल थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारतेन्दु नाट्य अकादमी के अध्यक्ष रवि शंकर खरे ने की।

इस अवसर पर भाऊराव देवरस सेवा न्यास के ब्रह्मदेव शर्मा, कोषाध्यक्ष राम निवास जैन, कार्यक्रम समन्वयक डॉ. विजय कर्ण, कार्यक्रम संयोजक रमाशंकर श्रीवास्तव, कार्यक्रम सहसंयोजक सतीश भारतीयम, भूमि ग्रुप के चेयरमैन बी.एम.सिंह ने पंडित दीन दयाल उपाध्याय को श्रद्धा सुमन अर्पित किये। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से मंचित इस नौटंकी में दर्शाया गया कि दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर 1916 को मथुरा जिले के नगला चन्द्रभान ग्राम में हुआ था। तीन साल की छोटी उम्र में ही दीनदयाल के पिताजी और सात साल की उम्र में उनकी माताजी का स्वर्गवास हो गया था। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने पिलानी, आगरा और प्रयाग में शिक्षा प्राप्त की। उनके जीवन पर रामलीला के कारण राम चरित का खासा प्रभाव पड़ा था। उनके समर्पण को देखते हुए 1953 में उन्हें अखिल भारतीय जनसंघ के महामंत्री निर्वाचित किया गया। दिसम्बर 1967 में वह जनसंघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 11 फरवरी 1968 की रात में रेलयात्रा के दौरान मुगलसराय के पास उनकी हत्या कर दी गयी।

नौटंकी शैली के कारण यह प्रस्तुति खासी प्रभावी रही। इसके माध्यम से कहा गया कि ऐसी कथा है व्यथा ही व्यथा है, दुख से भरे क्षण, सुख न मिला है। कोई क्या जाने, कैसे जिया है, एक महात्मा दुख से भरा है। सुख न जाना, दुख ही पहचाना। इस नौटंकी ने लोगों को संदेश दिया कि युवा पश्चिमी संस्कृति का अंधा अनुसरण न करे। संस्कारवान बने। इसके साथ ही कलाकारों ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के माध्यम से सत्यमेव जयते का संदेश दर्शकों तक पहुंचाया। नौटंकी के अनुसार कोई भी देश पूंजीवाद पर नहीं बलवान हो सकता है। इसके लिए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सुविधाओं को पहुंचाना होगा। मंच पर अर्चना कुशवाहा, विकास गिरि, दीपक गुर्दासानी, आदित्य अस्थाना, रविन्द्र यादव, शिवम सिंह, विराज मौर्य, रूबल, बिंदुशा तिवारी, सृष्टि जायसवाल, अर्चना जैन, सुमित सिंह, सौरभ शुक्ला, अतिफ अहमद, किशन मिश्रा, दीना शिवम सिंह, कृतिका श्रीवास्तव, पंकज सत्यार्थी, अभिषेक यादव, दुर्गेश सिंह, उज्जवल, अर्चना जैन, बंटी मिश्रा, दिव्या, सृष्टि, वैष्णवी, प्रियांशी, कशिश, नेहा, आकांक्षा ने अभिनय किया। ढोलक पर इमरान, नक्कारे पर मोहम्मद सिद्दीकी, सारंगी पर जीशान, तबले पर इलियास, गायन में अर्चना कुशवाहा ने साथ दिया। प्रकाश परिकल्पना मनीष सैनी की प्रस्तुति के अनुरूप रही।

❐

पर्यावरण संरक्षण

❑ रश्मि अग्रवाल

मानव की आवश्यकताओं, प्राकृतिक दोहन की क्षमताओं और पर्यावरण के बीच समायोजन होना आवश्यक है, और इसकी एक मजबूत कड़ी है, आज की भावी पीढ़ी। इसलिए बालकों को सुचेतना उत्पन्न करने हेतु नियमित शिक्षण संस्थाओं के उद्देश्य को पुनःस्थापित करने की आवश्यकता है। आज जबकि पर्यावरण में अनेक प्रकार के विकार उत्पन्न हो चुके हैं। तब भी शुद्ध सामाजिक पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधनों से हमें अधिकतम लाभों की प्राप्ति हो रही है।

अतः पर्यावरण को संतुलित बनाए रखने हेतु विद्यालय के कार्यकाल में ही निम्न उद्देश्यों की पूर्ति करनी होगी।

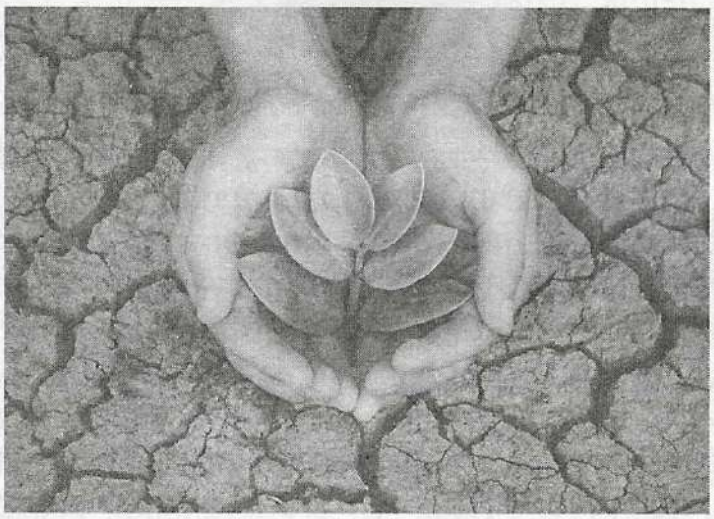

छात्रों को यह समझना कि प्रकृति प्रदत्त जो संसाधन हमें मिले हैं, उनका वर्तमान की दौड़ में दोहन तो कर रहे हैं किन्तु पुनः निर्माण नहीं। इसीलिए इस आशंका से कि अगर ये माध्यम समाप्त हो गये तो....इस विषय पर उन्हें पूरी जानकारी कराना।

छात्रों को ज्ञान हो कि परितंत्र को संतुलित बनाए रखने हेतु विद्यालय के कार्यकाल में ही निम्न उद्देश्यों की पूर्ति करनी होगी।

छात्र को यह समझाना कि प्रकृति प्रदत्त जो संसाधन हमें मिले है, उनका वर्तमान की दौड़ में दोहन तो कर रहे हैं किंतु पुनः निर्माण नहीं। इसलिए इस आशंका से कि अगर ये माध्यम समाप्त हो गये तो इस विषय पर उन्हें पूरी जानकारी कराना।

छात्रों को ज्ञान हो कि परितंत्र को संतुलित बनाए रखने हेतु विभिन्न जीवों, एंव पेड़–पौधों का पर्यावरण में रहना अति आवश्यक है।

छात्रों को अवगत कराना कि किस प्रकार व्यक्तिगत, बाहरी एवं मूल रूप से मानव, प्राकृतिक साधन और जीव–जन्तु एक दूसरे संबंधित ज्ञान विश्लेषणात्मक ढंग से समझायें ताकि वो वैज्ञानिक व परम्परागत तथ्यों को गुणवत्ता के आधार पर समझ सकें।

व्यक्तिगत जीवन, समाज एवं मानव जीवन के तौर–तरीकों पर पर्यावरण असंतुलन से क्या–क्या दुष्प्रभाव पड़ सकते हैं उनसे परिचित करवाएं।

सामाजिक प्राणी होने के नाते प्रकृति के सरंक्षण की भावना एवं व्यवहार का विकास करना।

विभिन्न कृत्यों द्वारा होने वाली पर्यावरणीय हानियों के संबंध में पूर्ण घोषणाएं करने की दक्षता पैदा करना और उनका मूल्यांकन करते हुए सही स्थिति का ज्ञान करने की क्षमता का विकास करना। सर्जनात्मकता के आधार पर शुद्ध किए गए कार्यों की प्रशंसा करना।

पर्यावरण को आवश्यक विषय मानते हुए अन्य विषयों की भांति इसे भी शिक्षा प्रावधानों से जोड़कर प्रारम्भ से ही अनिवार्य बनाएं व पर्यावरण में कैसे कैरियर बनाएं इस संबंध में दिया जाए।

इस प्रकार से बालकों के भविष्य में पर्यावरण संरक्षण के अंतर्गत विशेष योगदान प्रदान कर सकेंगे।

❑

संस्था परिचय

सक्षम-माधव नेत्र पेढ़ी एक प्रकल्प

विश्व स्वास्थ संगठन (वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन) के अनुसार जागतिक स्तर पर अंधत्व के कारणों में मोतियाबिंदु (कैटेरेक्ट) कांचबिंदु (ग्लॉकोमा) और एज रिलेटेड मैक्यूलर डिजनरेशन के बाद चौथा सबसे महत्वपूर्ण कारण कॉर्निया अपारदर्शक होना है।

कॉर्निया (पुतली) नेत्र का पारदर्शक भाग है। प्रकाश किरणों का योग्य परावर्तन होके सामने के दृश्य नेत्र पटलों पर योग्य पद्धति से देखने के लिये कॉर्निया पारदर्शक होना आवश्यक है। अगर अपघात, जन्म से कॉर्निया अपारदर्शक हो गई तो व्यक्ति दृष्टिहीन हो जाता है।

दृष्टिहीनता जीवन का अभिशाप है। ऐसे समय नेत्रदान दृष्टिहीनों के लिये वरदान है। कॉर्निया प्रत्यारोपण से दृष्टि प्राप्त होती है। कॉर्निया प्रत्यारोपण चिकित्सा विज्ञान का चमत्कार है। यह नेत्रहीनों के जीवन में खुशियाँ लाती है।

मगर कॉर्निया प्रत्यारोपण के लिये स्वस्थ कॉर्निया (पारदर्शक) की आवश्कता हैं। कॉर्निया प्रत्यारोपण में अस्वस्थ कॉर्निया (अपारदर्शक) की जगह स्वस्थ (पारदर्शक) कॉर्निया लगाया जाता है। कॉर्निया तभी किसी दृष्टिहीन को लगाया जाता है, जब कोई इसे दान में दें और ये नेत्रदान मरणोपरांत ही किया जा सकता है। इसके लिये नेत्रदान को जनआंदोलन बनाया जाना आवश्यक है।

भारत में सरकारी आकड़ों के अनुसार 20 लाख लोग कॉर्निया अपारदर्शक होने से अंध है। अपने देश में प्रतिवर्ष 1 करोड़ नागरिक मृत होने के बावजूद केवल 45 से 50 हजार कॉर्निया प्राप्त होते हैं। हर साल कॉर्नियागस्त अंधत्व की संख्या बढती जाती है। इससे अनुमान निकाला जा सकता है कि भारत में मरणोपरांत नेत्रदान करने के लिये व्यापक व गंभीरपूर्वक जनजागरण करना आवश्यक है।

माधव नेत्र बैंक के उदय की संकल्पना एक प्रेरक घटना से संबध रखती है। 8 अगस्त 1993 को चेन्नई में रा. स्व. संघ के कार्यालय पर असामाजिक तत्वों द्वारा किये गये बम विस्फोट में 10 व्यक्ति शहीद हो गये, उसमें संघ के प्रचारक श्री काशीनाथ भी थे, उनकी ईच्छानुसार मरणोपरांत नेत्रदान कराया गया, जिससे दो दृष्टिहीनों को नेत्रदान प्राप्त हो सका। अपने इन कार्यकर्ताओं को श्रद्धांजली अर्पित करते समय रा. स्व. संघ के सरसंघचालक प. पू. प्रो राजेन्द्र सिंह ने आवाह्न किया कि नेत्रदान जैसे पुण्य कार्य में सहभागी बनकर दृष्टिहीनों को नेत्रज्योति प्रदान कर अपने जीवन को धन्य बनायें और समाज के प्रति अपने दायित्व को निभायें। इस आवाहन पर स्वयंसेवकों के प्रयास से नागपुर शहर के प्रतापनगर में 1994 में माधव नेत्र पेढ़ी की विधिवत स्थापना की गई। धीरे–धीरे निष्ठावान कार्यकर्ताओं के साथ चिकित्सक और विशेषज्ञ भी इस प्रकल्प में जुड़ते गये। इन सभी ने इस प्रकल्प में निःशुल्क सेवा प्रदान की।

नेत्रदान के विषय में समाज में जागृती निर्माण करना, नेत्रदान का महत्व बताना, समाज में नेत्रदान संबधी जो भ्रामक धारणा हैं उनका निराकरण करना और नेत्रदान करने के लिये प्रेरित करना तथा नेत्रदान द्वारा प्राप्त हुए स्वस्थ व्यक्तियों को दृष्टिलाभ कराने का प्रयास करना यह माधव नेत्रपेढी का लक्ष्य रखा गया।

नेत्रदान संबंधी जानकारी पथनाट द्वारा तथा ऑडियो विडियो द्वारा स्कूल, महाविद्यालय, ज्येष्ठ नागरिक मंडल, सरकारी, निमसरकारी संस्था अस्पताल में बताई जाती है। हमारी संस्था नेत्रदान जनजागरण अभियान साल भर चलाती है, ऐसे कार्यक्रम को कालमर्यादा नही होती।

भारत सरकार द्वारा हर साल 25 आगस्त से 8 सितम्बर तक नेत्रदान जनजागरण पखवाड़ा मनाया जाता है। इस पखवाड़े में हमारे द्वारा शहर और गावों में जाकर नेत्रदान के लिये जानकारी दी जाती है। ऐसे कार्यक्रम में कुछ खेल खेलकर सामान्य

व्यक्तियों को दृष्टिहीन व्यक्तियों की समस्याओं से अवगत किया जाता है। ऐसे खेल में, जैसे आँखों में पट्टी बांधकर चलाया जाना, बंद तालों को खोलना, फूलों कि माला बनाना, इत्यादि खेलों का प्रयोग किया जाता है।

माधव नेत्र पेढ़ी के प्रारम्भ से प्राप्त किये गये नेत्रसंकलन का वृतांत

कुल प्राप्त कॉर्निया–3115, कॉर्निया प्रत्यारोपण से दृष्टि प्राप्त व्यक्ति–1320, जन सेवा की भावना से प्रेरित होकर अपनी इच्छा से मरणोपरांत नेत्रदान संकल्प–लगभग 10000.

अनेक संस्था और मान्यवर व्यक्तियों ने संस्था के कार्य में उपयोगी साधनों का दान देकर हमारे कार्य को समृद्ध किया है। विशेषतः रोटरी क्लब ऑफ नागपुर वेस्ट द्वारा प्रदत्त स्पेक्यूलर माइक्रोस्कोप के कारण विदर्भ में माधव नेत्रपेढ़ी को एक विशेष स्थान मिला हुआ है। अब नेत्रदान से प्राप्त कॉर्निया का परीक्षण व मूल्यांकन गुणवत्तापूर्ण रीति से करना संभव हो गया है। नेत्रपेढ़ी इन सभी संस्थाओं और दानदाताओं की आभारी है। हमारी संस्था नेत्रदान के बाद मृत व्यक्ति के परिवारों स्मृति पत्र देकर उनका आभार व्यक्त करती है।

नेत्रदान संकल्प–''सामाजिक ऋण तथा जन सेवा की भावना से प्रेरित होकर मै अपनी इच्छा से मरणोपरांत नेत्रदान करना चाहता हूँ'', इन विचारों का नेत्रसंकल्प पत्र नजदीक के नेत्र बैंक में देकर अपनी इच्छा व्यक्त कर सकते हैं। अपने नेत्रदान संकल्प के बारे में समस्त परिजनों से चर्चा करके अन्य परिजनों को नेत्रदान संकल्प के बारे जानकारी देकर प्रयास कर सकते है।

निःसंदेह नेत्रदान अभियान की सफलता में उदारमन से नागरिकों का योगदान अमूल्य है। वे ही हमें परिजनों की मृत्योपरांत नेत्रदान के माध्यम से सेवा अवसर प्रदान करते हैं। अंधत्व निवारण के महायज्ञ में नेत्रदान की पूर्णाहुति प्रदान करने वाले महान आत्माओं को माधव नेत्र बैंक श्रद्धासुमन एवं उनके परिजनों का सामाजिक दायित्व हेतु आभार प्रगट करती है।

अंत में मेरे सहकारी श्री शिरीष दारव्हेकर, (अनुसंधान संयोजक, सक्षम) लिखित कविता कि चार पंक्तियाँ सादर करता हूँ।

''जब तक यह जीवन है
मै बस यही वसीयत करना चाहूँ
मेरी अंतिम सांसों के संग
नेत्र किसी को देता जाऊँ!''

प्रकल्प प्रमुख
श्री अशोक कर्णिक
माधव नेत्र पेढ़ी
संपर्क क्रमांक 09730757060

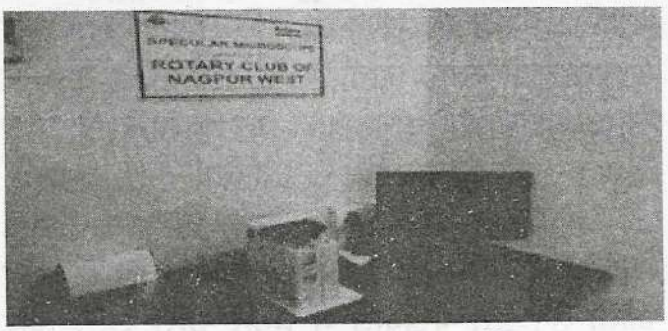

रोटरी क्लब ऑफ नागपुर वेस्ट द्वारा दिया गया स्पेक्यूलर माइक्रोस्कोप

माधव नेत्रपेढ़ी कार्यालय

घर से करें सेवा की शुरुआत

जयपुर : सेवा भारती राजस्थान द्वारा सेवा कार्यों से युवाओं को जोड़ने के लिये 'सेवा में युवा' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 200 युवाओं ने भाग लिया। 'यूथ फॉर सेवा' के क्षेत्र प्रचार मंत्री श्री उदय सिंह कुन्तल ने प्रस्तावना रखी भारती के क्षेत्र संगठन मंत्री श्री मूलचन्द सोनी ने सेवा भारती के उद्देश्यों व कार्य के बारे में विस्तार से बताया। मुख्य अतिथि श्री आदी गुरुदास जी ने युवाओं को सेवा क्यों करनी चाहिए और इसके लिये कैसे तैयार होना है इसके बारे में बहुत ही रोचक ढंग से बताया।

अंत में सह क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम ने युवाओं को सेवा का मर्म बताया व कहा कि सेवा की शुरुवात हम अपने घर में अपने दादा, दादी, माँ, पिताजी व बड़ो की सेवा से प्रारंभ करके समाज के जरूरतमंद लोगों तक पहुँच सकते हैं।

विशेषज्ञ चिकित्सीय परीक्षण शिविर

गोरखपुर : 6 अक्टूबर को नदुआ व लालपुर टीकर गांवों में सेवा भारती द्वारा विशेषज्ञ चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। स्वास्थ्य आयाम प्रमुख डॉ. निखिल चौधरी व उनकी धर्मपत्नी डॉ. दिशा चौधरी ने नाक, कान व गला रोग हेतु चिकित्सा शिविर का आयोजन किया। सेवा भारती मातृ मंडली की गोरक्ष प्रांत प्रमुख श्रीमती नीलम चतुर्वेदी के नेतृत्व में औशधि वितरण, ब्लड शुगर जांच, आयुष्मान भारत जागरुकता व लाभार्थी सत्यापन का कार्य किया गया। शिविर में 136 मरीजों का उपचार किया गया।

गांव की एक महिला पूजा, के घर पर 'महिला प्रशिक्षण केन्द्र' की स्थापना की गयी। अनेक ग्रामीण ने सरकारी योजनाओं के बारे में श्री सर्वेश दुबे से जानकारी प्राप्त की। ❐

मन निर्मल सुविचार हो,
रहे त्याग का भाव।
राष्ट्र–प्रेम सद्भाव का,
कभी न होय अभाव।।

वृद्ध और माता–पिता,
इनसे रहें न दूर।
जीवन भर सेवा करें,
मिले शांति भरपूर।।

- शिव.

Om Prakash Srivastava

सेवा संवाद

के

के सफल प्रकाशन

हेतु

हार्दिक शुभकामनाएं

C-249, INDIRA NAGAR, LUCKNOW.

पण्डित दीन दयाल उपाध्याय की जीवन गाथा पर आधारित नौटंकी दीन-जन प्यारे

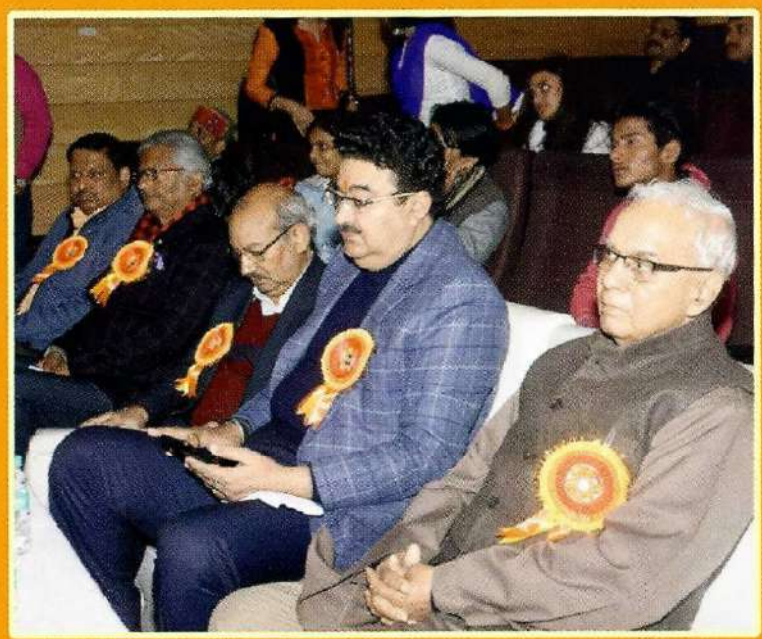

RNI No. UPHIN/2005/15853
सेवा संवाद मार्च 2019

डाक पंजीकरण क्र. SSP/LW/NP-136/2019-21
प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ

कैलेण्डर वर्ष 2019–21
प्रेषण तिथि– प्रत्येक माह 26 व 30

कुल मुद्रित पृ. की सं. 40

श्रद्धेय भाऊराव देवरस जन्मशती वर्ष

भा. भाउक परम उदार मन,
शुद्ध, बुद्ध, चैतन्य ।
ऊ. ऊर्जा से भरपूर तुम,
राव देवरस धन्य ।।

रा. राम सरिस गम्भीर प्रिय,
सेवा के आदर्श ।
व. वक्ता-श्रोता सुचिन्तक,
परहित करत विमर्श ।।

दे. देश-धर्महित जागरण,
और मनुज निर्माण ।
व. वन-गिरिजन रक्षार्थ तुम,
साधक परम प्रमाण ।।

र. रसमय सरस समाज-हित,
हे ! प्रतिभा सम्पन्न ।
स. सत्य-समर्पण मार्ग पर,
कभी न हुए विपन्न ।।

जन-जन के उर में बसा, जिनका उत्तम नाम।
ऐसे भाऊ राव को, शत-शत नमन-प्रणाम।।

डॉ० शिवभूषण त्रिपाठी

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल द्वारा भाऊराव देवरस न्यास, सी–91, निरालानगर, लखनऊ (उ.प्र.) के लिए बर्फानी इण्टरप्राइजेज, ए–1, गोविन्दा बिल्डिंग, शाहनजफ रोड, हजरतगंज, लखनऊ, से मुद्रित। सम्पादक : डॉ शिवभूषण त्रिपाठी